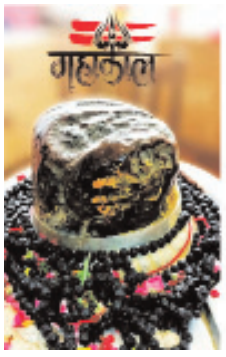

साप्ताहिक

अचलेश्वर एक्सप्रेस

वर्ष-1 अंक-01 | ग्वालियर, सोमवार 24 अगस्त 2026 | पृष्ठ 8, मूल्य 2 रुपया | RNI No. - MPHIN/26/A/7091

एसएसपी धर्मवीर सिंह यादव के नेतृत्व में पुलिसिंग में सख्ती और निष्पक्षता का संदेश, अपराधियों पर कार्रवाई से बढ़ा जनता का भरोसा

ढाई साल में बदली ग्वालियर की पुलिसिंग: कानून के सामने सिफारिशों का असर कम

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। ग्वालियर की पुलिसिंग में बीते ढाई साल के दौरान बदलाव साफ नजर आया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह यादव के नेतृत्व में पुलिस ने अपराध नियंत्रण के साथ-साथ कार्रवाई में निष्पक्षता और जवाबदेही पर जोर दिया है। पुलिसिंग को लेकर आम लोगों के बीच यह धारणा मजबूत हुई है कि कार्रवाई अब किसी प्रभाव या सिफारिश से नहीं, बल्कि मामले की गंभीरता और कानून के आधार पर तय हो रही है।

थाना प्रभारियों की तैनाती में बदली तस्वीर

पुलिस महकमे में थाना प्रभारियों की तैनाती हमेशा से चर्चा का विषय रही है। बीते समय में सिफारिशों और प्रभाव को लेकर तरह-तरह की बातें सामने आती रही हैं, लेकिन अब पुलिस महकमे में कार्यक्षमता और परिणाम को प्राथमिकता देने की कोशिश दिखाई देती है। इससे उन पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों में भी बेहतर संदेश गया है, जो अपने काम के आधार पर आगे बढ़ना चाहते हैं।

दबाव की राजनीति से दूरी का संदेश

ग्वालियर में छोटे-बड़े पुलिस मामलों में बाहरी हस्तक्षेप की चर्चाएं नई नहीं हैं। हालांकि मौजूदा पुलिस नेतृत्व के दौरान पुलिस कार्रवाई को लेकर यह संदेश देने की कोशिश हुई है कि कानून से ऊपर कोई नहीं है। शिकायत हो या अपराध, पुलिस का रुख मामले की परिस्थितियों और उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर तय करने पर जोर रहा है।

ब्लैकमेलिंग के आरोपों पर भी सख्ती: अधिकारियों और विभागों पर दबाव बनाने की कोशिश करने वाले लोगों को लेकर भी पुलिस का रुख सख्त नजर आया है। खासकर सूचना के अधिकार अथवा अन्य माध्यमों का इस्तेमाल कर व्यक्तिगत हित साधने और दबाव बनाने की शिकायतों पर पुलिस ने कार्रवाई का रास्ता अपनाया है। इससे प्रशासनिक स्तर पर भी ऐसे मामलों को लेकर सतर्कता बढ़ी है।

ट्रांसफर-पोस्टिंग की चर्चाओं पर लगा ब्रेक: पुलिस विभाग में तबादले और पोस्टिंग हमेशा से चर्चाओं में रहे हैं। पिछले ढाई वर्षों में इस व्यवस्था को लेकर भी पुलिस नेतृत्व ने स्पष्ट संदेश देने का प्रयास किया है कि पद और जिम्मेदारी कामकाज की क्षमता के आधार पर तय होनी चाहिए। इसका असर विभागीय अनुशासन और कार्यप्रणाली में दिखाई देने का दावा किया जा रहा है।

अपराधियों पर कार्रवाई, जनता में भरोसा: हत्या, लूट, चोरी, वाहन चोरी, गैंगवार और साइबर अपराध जैसे मामलों में पुलिस की लगातार कार्रवाई ने अपराधियों पर दबाव बढ़ाया है। कई मामलों में गिरोहों और आरोपियों की गिरफ्तारी के साथ पुलिस ने त्वरित कार्रवाई का संदेश दिया। इसका दूसरा असर यह हुआ कि आम नागरिकों में पुलिस के प्रति भरोसा बढ़ाने की जमीन तैयार हुई है।

ग्वालियर में कानून सर्वोपरि होने का संदेश

ढाई साल की पुलिसिंग को देखें तो सबसे बड़ा बदलाव पुलिस के काम करने के तरीके को लेकर बनी धारणा में दिखाई देता है। अब सिफारिश से ज्यादा कार्रवाई, प्रभाव से ज्यादा कानून और दबाव से ज्यादा पुलिस की प्रक्रिया की चर्चा हो रही है। एसएसपी धर्मवीर सिंह यादव के नेतृत्व में ग्वालियर पुलिस ने कम से कम इतना संदेश जरूर मजबूत किया है कि कानून की कसौटी पर हर व्यक्ति बराबर है और पुलिस कार्रवाई का आधार मामला होना चाहिए, पहुंच नहीं।

ग्वालियर की कमान काम के दम पर पहचान कलेक्टर रुचिका चौहान के नेतृत्व में बदलती प्रशासनिक तस्वीर

संवेदनशीलता के साथ सख्त फैसले विकास के साथ जनसेवा ग्वालियर को बेहतर बनाने की दिशा में लगातार सक्रिय जिला प्रशासन

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। ग्वालियर जैसे ऐतिहासिक और तेजी से विकसित हो रहे जिले का प्रशासन संभालना आसान जिम्मेदारी नहीं है। शहर से लेकर ग्रामीण अंचल तक विकास, जनकल्याण, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण, निर्वाचन, राजस्व और नागरिक सेवाओं जैसी अनेक जिम्मेदारियां जिला प्रशासन के सामने रहती हैं। इन तमाम जिम्मेदारियों के बीच कलेक्टर रुचिका चौहान के नेतृत्व में ग्वालियर प्रशासन की कई ऐसी पहलें सामने आई हैं, जिनमें प्रशासनिक सक्रियता के साथ जनहित को प्राथमिकता देने का प्रयास दिखाई देता है।

महिला सशक्तिकरण को जमीन पर उतारने की पहल

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में जिला प्रशासन की 'शक्ति दीदी' जैसी पहल उल्लेखनीय रही है। महिलाओं को रोजगार के अवसरों से जोड़ने और आर्थिक रूप से मजबूत बनाने पर जोर दिया गया। ऐसी पहलें केवल योजनाओं की घोषणा तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि महिलाओं को अपने पैरों पर खड़ा होने का अवसर देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती हैं।

महिला जनप्रतिनिधियों को खुद जिम्मेदारी संभालने का संदेश

स्थानीय शासन में महिलाओं की भागीदारी को प्रभावी बनाने की दिशा में भी कलेक्टर का रुख स्पष्ट दिखाई दिया। महिला जनप्रतिनिधियों से अपेक्षा की गई कि वे अपनी जिम्मेदारियां स्वयं संभालें और निर्णय प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाएं। यह संदेश महिला नेतृत्व को मजबूत करने के साथ लोकतांत्रिक व्यवस्था में निर्वाचित प्रतिनिधियों की जवाबदेही को भी रेखांकित करता है।

पर्यावरण संरक्षण का संदेश, ई-रिक्शा से कलेक्ट्रेट पहुंचीं कलेक्टर

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ई-रिक्शा से कलेक्ट्रेट पहुंचकर कलेक्टर रुचिका चौहान ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इसके साथ पौधारोपण जैसी गतिविधियों में भागीदारी ने प्रशासनिक नेतृत्व की ओर से पर्यावरण के प्रति जागरूकता का संदेश दिया। यह पहल इसलिए भी खास रही क्योंकि प्रशासनिक अधिकारी जब स्वयं किसी अभियान का हिस्सा बनते हैं तो उसका संदेश आम लोगों तक अधिक प्रभावी तरीके से पहुंचता है।

निवेश और रोजगार के लिए नए अवसरों पर जोर

ग्वालियर में उद्योग और निवेश को बढ़ावा देने के साथ रोजगार के अवसर पैदा करने की दिशा में भी प्रशासनिक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। महिलाओं को औद्योगिक गतिविधियों से जोड़ने और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ाने की दिशा में पहलें ग्वालियर के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण मानी जा सकती हैं।

ग्वालियर को केवल ऐतिहासिक शहर के रूप में नहीं बल्कि निवेश और रोजगार के संभावनाओं वाले जिले के रूप में विकसित करने की सोच आने वाले समय में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

जनगणना जैसे बड़े अभियान में कर्मचारियों का बढ़ाया उत्साह

2026 की जनगणना जैसे बड़े प्रशासनिक अभियान में कर्मचारियों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। ग्वालियर प्रशासन की ओर से बेहतर कार्य करने वाले प्रगणकों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रशस्ति पत्र, मूवी टिकट और कलेक्टर के साथ परिवार सहित डिनर जैसी पहल की खबर सामने आई। यह तरीका कर्मचारियों को केवल जिम्मेदारी निभाने के लिए नहीं, बल्कि बेहतर गुणवत्ता के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करने वाला कदम माना जा सकता है।

चुनाव प्रबंधन की बड़ी जिम्मेदारी भी कंधों पर: कलेक्टर के पास जिला निर्वाचन अधिकारी की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी होती है। मतदाता सूची से लेकर निर्वाचन संबंधी व्यवस्थाओं, मतदाता जागरूकता और चुनावी प्रक्रिया के सुचारु संचालन तक जिला प्रशासन की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। ग्वालियर जैसे बड़े जिले में चुनाव प्रक्रिया को व्यवस्थित और निष्पक्ष तरीके से संचालित करना प्रशासन के सामने बड़ी चुनौती होती है। इस जिम्मेदारी में बेहतर समन्वय और समयबद्ध निर्णय बेहद जरूरी होते हैं।

प्रशासन की असली पहचान जनता के अनुभव से बनती है

किसी भी कलेक्टर के कार्यकाल का मूल्यांकन केवल सरकारी आदेशों या बैठकों की संख्या से नहीं किया जा सकता। असली मूल्यांकन इस बात से होता है कि आम नागरिक को प्रशासन कितना सुलभ महसूस होता है, योजनाओं का लाभ कितनी तेजी से पहुंचता है और अधिकारियों में जिम्मेदारी की भावना कितनी मजबूत होती है। रुचिका चौहान के कार्यकाल में महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण जागरूकता, रोजगार एवं निवेश, जनगणना प्रबंधन, निर्वाचन व्यवस्था और डिजिटल सेवाओं से जुड़ी पहलें प्रशासन की सक्रिय भूमिका को सामने रखती हैं।

ग्वालियर के लिए उम्मीद–काम की रफ्तार बनी रहे: ग्वालियर की चुनौतियां बड़ी हैं और अपेक्षाएं उससे भी बड़ी। शहर की नागरिक सुविधाओं से लेकर ग्रामीण विकास तक, रोजगार से लेकर जनकल्याण तक प्रशासन के सामने लगातार नई चुनौतियां आती रहेंगी। ऐसे में जरूरी है कि जनहित को केंद्र में रखकर प्रशासनिक सक्रियता लगातार बनी रहे और सरकारी योजनाओं का लाभ अंतिम पंक्ति के

डिजिटल सेवाओं से जनता तक पहुंच रहा प्रशासन

आज प्रशासन का एक बड़ा हिस्सा डिजिटल माध्यमों से नागरिकों तक पहुंच रहा है। प्रमाण-पत्र, राजस्व सेवाएं, सामाजिक सुरक्षा, जनशिकायत, भू-अभिलेख, सीएम हेल्पलाइन और अन्य ऑनलाइन सेवाओं ने नागरिकों के लिए प्रशासन तक पहुंच को आसान बनाने में भूमिका निभाई है। डिजिटल प्रशासन का उद्देश्य यही है कि लोगों को छोटी-छोटी प्रशासनिक सेवाओं के लिए अनावश्यक परेशानी न उठानी पड़े और अधिक से अधिक काम पारदर्शी तरीके से ऑनलाइन उपलब्ध हो सके।

ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों पर बराबर नजर जरूरी: ग्वालियर केवल शहर तक सीमित नहीं है। जिले में बड़ी संख्या में ग्रामीण क्षेत्र और गांव भी हैं। ऐसे में जिला प्रशासन की जिम्मेदारी शहर की समस्याओं के साथ ग्रामीण क्षेत्रों की आवश्यकताओं पर भी नजर रखने की होती है। विकास योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन प्रभावी हो और आम नागरिक की शिकायतों पर प्रशासनिक स्तर पर सुनवाई हो–यही किसी भी जिला प्रशासन की वास्तविक कसौटी होती है।

ग्वालियर में यातायात पुलिस की सख्ती

ओवरलोड बस और सवारी वाहनों पर कार्रवाई, चौराहों को जाम से राहत की कोशिश

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। शहर की बिगड़ती यातायात व्यवस्था को सुधारने और चौराहों पर लगने वाले जाम को कम करने के लिए यातायात पुलिस ने कार्रवाई तेज कर दी है। इसी क्रम में यातायात थाना प्रभारी मेला अभिषेक रघुवंशी के नेतृत्व में ओवरलोड बसों और सड़क पर खड़े होकर सवारियां भरने वाले वाहनों के खिलाफ कार्रवाई की गई।

भिंड से ग्वालियर आ रही 36 सीटर बस में करीब 60 सवारियां मिलने पर यातायात पुलिस ने बस को डी.डी. नगर के पास रुकवाकर थाने में खड़ा कराया। बस के खिलाफ 17 हजार रुपए की चालानी कार्रवाई की गई। इसके साथ ही गोला का मंदिर और बारादरी चौराहे पर सवारी वाहनों की भी जांच की गई। करीब 20 सवारी वाहनों पर कुल 41 हजार रुपए की चालानी कार्रवाई की गई। यातायात पुलिस का कहना है कि इस कार्रवाई का उद्देश्य सिर्फ चालान करना नहीं, बल्कि चौराहों पर यातायात को व्यवस्थित करना है। खास तौर पर लेफ्ट टर्न को फ्री रखने, सड़क पर खड़े होकर सवारियां भरने वाले वाहनों को नियंत्रित करने और अनावश्यक जाम की स्थिति को कम करने पर जोर दिया जा रहा है। वहीं, इस पूरी कार्रवाई ने आरटीओ ग्वालियर की कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े किए हैं। सवाल यह है कि यदि 36 सीटर बस में 60 सवारियां भरकर लंबे रूट पर चल रही थी, तो सड़क पर उतरने से पहले परिवहन विभाग की जांच व्यवस्था में यह बस कैसे निकल गई? ओवरलोड सवारी वाहनों पर यातायात पुलिस को कार्रवाई करनी पड़ रही है, तो आरटीओ की नियमित चेकिंग और निगरानी व्यवस्था कितनी प्रभावी है, यह भी विचारणीय है।

ग्वालियर से निकली आवाज अब भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया मंच पर गूंजेगी

ग्वालियर की जमीन से राष्ट्रीय मीडिया के मंच तक आशीष अग्रवाल को भाजपा ने दी बड़ी जिम्मेदारी

नितिन नबीन की नई टीम में आशीष ऊषा अग्रवाल को बड़ी जिम्मेदारी बने राष्ट्रीय मीडिया सह-संयोजक

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय टीम में मध्यप्रदेश को मिली अहम हिस्सेदारी के बीच एक नाम ने खास तौर पर राजनीतिक और मीडिया जगत का ध्यान खींचा है। मध्यप्रदेश भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष ऊषा अग्रवाल को अब पार्टी की राष्ट्रीय मीडिया टीम में राष्ट्रीय मीडिया सह-संयोजक की जिम्मेदारी सौंपी गई है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन की नई टीम में हुए इस बदलाव के बाद आशीष अग्रवाल की भूमिका प्रदेश की सीमाओं से निकलकर राष्ट्रीय स्तर तक पहुंच गई है।

प्रदेश की मीडिया रणनीति से राष्ट्रीय जिम्मेदारी तक

आशीष अग्रवाल के लिए यह नियुक्ति अचानक आया हुआ राजनीतिक पड़ाव नहीं, बल्कि पिछले कुछ वर्षों में पार्टी के मीडिया संगठन में निभाई गई जिम्मेदारियों का बड़ा विस्तार मानी जा रही है। सार्वजनिक रिपोर्टों के अनुसार वे मध्यप्रदेश भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी के रूप में पार्टी के पक्ष को मीडिया तक पहुंचाने, समसामयिक राजनीतिक मुद्दों पर प्रतिक्रिया देने और संगठन की मीडिया गतिविधियों को संचालित करने में सक्रिय रहे हैं। 2023 में भाजपा ने आशीष अग्रवाल को मध्यप्रदेश का प्रदेश मीडिया प्रभारी नियुक्त किया था। उस समय वे प्रदेश प्रवक्ता की भूमिका में भी सक्रिय थे। चुनावी दौर में पार्टी की मीडिया व्यवस्था को मजबूत करना और विपक्ष के राजनीतिक बयानों का जवाब देने की जिम्मेदारी मीडिया टीम के सामने महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में थी।

अब जिम्मेदारी छोटी नहीं, राष्ट्रीय है

राष्ट्रीय मीडिया सह-संयोजक का पद केवल नाम या पदवी तक सीमित नहीं है। भाजपा जैसे बड़े राजनीतिक संगठन में मीडिया विभाग पार्टी की राजनीतिक लाइन को देशभर में पत्रकारों, समाचार संस्थानों और सार्वजनिक विमर्श तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। नई व्यवस्था में अनिल बलूनी को राष्ट्रीय मीडिया संयोजक बनाया गया है। उनके साथ आशीष ऊषा अग्रवाल, प्रदीप भंडारी और सिद्धार्थ यादव को राष्ट्रीय मीडिया सह-संयोजक की जिम्मेदारी दी गई है। यानी अब आशीष अग्रवाल सीधे भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया तंत्र का हिस्सा होंगे।

मध्यप्रदेश के लिए भी बड़ी उपलब्धि

आशीष अग्रवाल की नियुक्ति को मध्यप्रदेश भाजपा के लिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। राष्ट्रीय संगठन में प्रदेश के नेताओं को मिली विभिन्न जिम्मेदारियों के बीच मीडिया विभाग में आशीष अग्रवाल को स्थान मिलना इस बात को रेखांकित करता है कि मध्यप्रदेश की संगठनात्मक और मीडिया गतिविधियों से जुड़े अनुभव को राष्ट्रीय स्तर पर भी उपयोगी माना गया है। नई राष्ट्रीय टीम में मध्यप्रदेश से कई नेताओं को जिम्मेदारियां मिली हैं। रिपोर्टों के अनुसार आशीष अग्रवाल को मीडिया विभाग की जिम्मेदारी मिली है, जबकि प्रदेश के अन्य नेताओं को भी संगठन के अलग-अलग क्षेत्रों में स्थान दिया गया है।

ग्वालियर कनेक्शन भी चर्चा में

आशीष अग्रवाल की राजनीतिक पहचान से जुड़ी एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि वे ग्वालियर से आते हैं। 2023 में उनकी प्रदेश मीडिया प्रभारी के रूप में नियुक्ति की खबरों में भी उन्हें ग्वालियर जिले से आने वाला नेता बताया गया था। यही वजह है कि राष्ट्रीय मीडिया टीम में उनकी नियुक्ति को ग्वालियर और मध्यप्रदेश के राजनीतिक एवं मीडिया हलकों में खास महत्व के साथ देखा जा रहा है। प्रदेश स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचना किसी भी संगठनात्मक जिम्मेदारी के लिहाज से महत्वपूर्ण विस्तार माना जाता है।

मीडिया की बदलती दुनिया में बड़ी चुनौती

आज राजनीति का मैदान केवल सभाओं, रैलियों और प्रेस कॉन्फ्रेंस तक सीमित नहीं है। टीवी चैनल, डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, वीडियो कंटेंट और त्वरित राजनीतिक प्रतिक्रियाएं राजनीतिक संचार का अहम हिस्सा बन चुके हैं। ऐसे समय में राष्ट्रीय मीडिया टीम की जिम्मेदारी और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। पार्टी के फैसलों को जनता तक पहुंचाना, राजनीतिक घटनाक्रम पर पार्टी का पक्ष सामने रखना और राष्ट्रीय मुद्दों पर मीडिया संवाद को प्रभावी बनाना इस व्यवस्था की प्रमुख चुनौतियों में शामिल होंगे। आशीष अग्रवाल को प्रदेश मीडिया प्रभारी के रूप में काम करने का अनुभव अब राष्ट्रीय स्तर पर इस्तेमाल किया जाएगा। यही इस नई जिम्मेदारी का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।

प्रदेश की पिच से राष्ट्रीय मैदान तक

आशीष अग्रवाल के राजनीतिक सफर में प्रदेश मीडिया प्रभारी की जिम्मेदारी एक महत्वपूर्ण पड़ाव रही। अब राष्ट्रीय मीडिया सह-संयोजक का पद उनके सामने कहीं बड़ा कार्यक्षेत्र लेकर आया है। मध्यप्रदेश जैसे राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण राज्य में मीडिया की जिम्मेदारी संभालने के दौरान उन्होंने पार्टी के राष्ट्रीय और प्रदेश नेतृत्व के संदेशों को मीडिया तक पहुंचाने का काम किया। अब वही अनुभव राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी की मीडिया रणनीति का हिस्सा बनेगा।

कौन संभालेगा राष्ट्रीय मीडिया की कमान?

भाजपा की नई व्यवस्था में राष्ट्रीय मीडिया संयोजक की जिम्मेदारी अनिल बलूनी को दी गई है। उनके साथ तीन राष्ट्रीय मीडिया सह-संयोजक काम करेंगे–आशीष ऊषा अग्रवाल, प्रदीप भंडारी और सिद्धार्थ यादव। प्रदीप भंडारी भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता के साथ पत्रकार और चुनावी विश्लेषक के तौर पर भी सक्रिय रहे हैं, जबकि सिद्धार्थ यादव राष्ट्रीय प्रवक्ता के रूप में पार्टी का पक्ष रखते रहे हैं। इस टीम में अलग-अलग अनुभव वाले चेहरों को शामिल किया गया है।

सिर्फ पद नहीं, जिम्मेदारी भी बड़ी

राष्ट्रीय पद मिलने के साथ अपेक्षाएं भी बढ़ती हैं। प्रदेश स्तर पर मीडिया प्रबंधन और राष्ट्रीय स्तर पर मीडिया रणनीति में जमीन-आसमान का अंतर है। देश के अलग-अलग राज्यों के राजनीतिक मुद्दे, राष्ट्रीय बहस, विपक्ष के आरोप, सरकार की नीतियां और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बदलता राजनीतिक विमर्श– इन सभी के बीच पार्टी की मीडिया लाइन को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना नई जिम्मेदारी का हिस्सा होगा। आशीष अग्रवाल के सामने अब सबसे बड़ी चुनौती यही होगी कि मध्यप्रदेश के अनुभव को राष्ट्रीय स्तर की जरूरतों के साथ कैसे जोड़ा जाए।

पहचान प्रदेश की, जिम्मेदारी पूरे देश की

आशीष अग्रवाल की नई भूमिका का सबसे बड़ा संदेश यही है कि मध्यप्रदेश की राजनीतिक और मीडिया पृष्ठभूमि वाला चेहरा अब भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया तंत्र में दिखाई देगा। यह जिम्मेदारी व्यक्तिगत राजनीतिक सफर के साथ-साथ प्रदेश संगठन की बढ़ती भूमिका को भी सामने रखती है। ग्वालियर से प्रदेश की राजनीति तक और प्रदेश की मीडिया व्यवस्था से भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया मंच तक पहुंचा यह सफर निश्चित रूप से आशीष अग्रवाल के राजनीतिक जीवन का महत्वपूर्ण अध्याय है।

वेल्डिंग सपोर्ट टूटने से हादसा, मूर्ति तीन हिस्सों में बंटी

मुंबई में 22 फीट ऊंची गणेश प्रतिमा गिरी, 2 मौतें, 5 घायलों में 2 बच्चियां

मुंबई, एजेंसी

मुंबई के भुलेश्वर में शनिवार रात करीब 10 बजे 22 फीट ऊंची गणेश प्रतिमा गिरने से 2 लोगों की मौत हो गई। 5 घायल हो गए, जिनमें 5 और 7 साल की दो बच्चियां शामिल हैं। पुलिस की शुरुआती जांच के मुताबिक, प्रतिमा लालबाग से भुलेश्वर लाई जा रही थी। पंडाल से करीब 50-60 मीटर पहले प्रतिमा के पीछे लगा वेल्डिंग सपोर्ट टूट गया।

इससे मूर्ति का संतुलन बिगड़ा और वह आगे की तरफ लोगों पर गिर गई। हादसे के बाद प्रतिमा के तीन टुकड़े हो गए। फायर ब्रिगेड, पुलिस, ट्रैफिक पुलिस, 108 एंबुलेंस और BMC की टीमों ने मौके पर पहुंचकर राहत-बचाव शुरू किया। घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पतालों में पहुंचाया गया, जहां इलाज के दौरान दो लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने मामले में एक्सीडेंटल डेथ रिपोर्ट दर्ज की है।

मरने वाले दोनों पुरुष, घायलों की पहचान हुई

हादसे में 33 साल के संकेत नेवशे और 30 साल के बृजेश हेमंत जोशी की मौत हुई है। घायलों की पहचान वैभव घेनंद (38), पवन चौरसिया (25), लावण्या गनेर (5), दिव्या गनेर (7) और कुणाल काशिद (26) के रूप में हुई है। अधिकारियों के मुताबिक, सभी घायलों की हालत स्थिर है।

मूर्ति गिरने के पीछे 2 दावे

दावा 1: नट-बोल्ट में तकनीकी खराबी: बताया जा रहा है कि 22 फीट ऊंची मूर्ति को फैक्ट्री से बाहर ले जाने से पहले नट-बोल्ट में कुछ तकनीकी कमी सामने आई थी। दावा है कि मूर्ति को रिपेयर करने के बाद तुरंत वहां से ले जाया गया था।

दावा 2: गड्ढे से ट्रॉली का बैलेंस बिगड़ा: एक अन्य दावे के मुताबिक, मंडप के पास पहुंचते समय मूर्ति को ले जा रही ट्रॉली का पहिया गड्ढे में चला गया। इससे ट्रॉली का बैलेंस बिगड़ा और मूर्ति आगे की ओर गिर गई। हालांकि, मूर्ति गिरने की असली वजह को लेकर इन दोनों दावों की पुलिस या प्रशासन की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

एमपी में 6 महीने पुरानी सड़क बही, पुल डूबा

यूपी के 19 जिलों में बाढ़, वाराणसी की कॉलोनियां जलमग्न; उत्तरकाशी में हाईवे बंद, घरों में घुसा पानी

भोपाल, एजेंसी

मध्य प्रदेश में लगातार बारिश के चलते कई इलाकों में हालात बिगड़ गए हैं। सीधी में शनिवार को रुपए104 करोड़ लागत से 6 महीने पहले बनी सड़क का बड़ा हिस्सा बारिश में बह गया। नरसिंहपुर में रेतघाट पुल पानी में डूब गया है। सतना में बाइक समेत तीन लोग नाले में बह गए। इनमें दो लोग बच गए। तीसरा लापता है। पन्ना में उफनती नदी में एक डंपर बह गया।

उत्तर प्रदेश में भी बारिश और नदियों के बढ़ते जलस्तर से 19 जिलों में बाढ़ जैसे हालात हैं। 92 गांवों की फसलें डूब गई हैं और 26 गांव टापू बन गए हैं। प्रभावित लोगों तक नाव और मोटर बोट के जरिए राहत सामग्री पहुंचाई जा रही है। प्रयागराज में गंगा-यमुना का जलस्तर बढ़ने से घाट और रिवर फ्रंट जलमग्न हैं।

वाराणसी में सभी 84 घाट जलमग्न हो चुके हैं। अस्सी घाट पर जहां दुकानें लगती थीं, वहां नावें चल रही हैं। दशाश्वमेध घाट की गंगा आरती अब छत पर कराई जा रही है। वरुणा नदी का पानी रिहाइशी कॉलोनियों तक पहुंच गया है।

कानपुर में गंगा के साथ-साथ पांडू नदी भी उफान पर है। इससे निचले इलाकों में बने घरों में 4 से 6 फीट तक पानी भर गया है। उत्तराखंड में लगातार बारिश के बीच उत्तरकाशी में शनिवार को लैंडस्लाइड हुआ। इसके कारण गंगोत्री हाईवे पर मलबा आने से रास्ता बंद हो गया, जबकि जोशियाड़ा इलाके में बारिश का पानी घरों में घुस गया। प्रदेश में फिलहाल 80 सड़कें बंद हैं, इनमें नैनीताल की 15, चमोली और पिथौरागढ़ की 13-13 सड़कें शामिल हैं।

दिल्ली एयरपोर्ट के आसपास खराब मौसम की चेतावनी

दिल्ली एयरपोर्ट के आसपास मौसम विभाग ने खराब मौसम की चेतावनी दी है। हालांकि, अभी एयरपोर्ट पर उड़ानों का संचालन सामान्य है। एयरपोर्ट की टीमें दूसरी एजेंसियों के साथ मिलकर यात्रियों को किसी परेशानी से बचाने के लिए काम कर रही हैं। यात्रियों से कहा गया है कि वे अपनी उड़ान की जानकारी के लिए संबंधित एयरलाइन से संपर्क करें।

जम्मू-कश्मीर के रामबन में प्रशासन ने अलर्ट जारी किया

जम्मू-कश्मीर के रामबन जिले के अलग-अलग हिस्सों में तेज बारिश के साथ बिजली गिरने की घटनाएं सामने आईं। मौसम खराब होने के चलते जिला प्रशासन ने अलर्ट जारी किया है। प्रशासन ने खासकर ऊंचाई वाले इलाकों और नदियों, नालों के पास रहने वाले लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी है। लोगों से खराब मौसम के दौरान बिना जरूरी काम के घर से बाहर न निकलने की अपील की गई है।

बंगाल की खाड़ी में डूबा मालवाहक जहाज, दो क्रू को बचाया, 22 अभी भी लापता

भुवनेश्वर,(ए)। ओडिशा के पारादीप तट से करीब 444 किलोमीटर दूर बंगाल की खाड़ी में शनिवार को एक बड़ा समुद्री हादसा हुआ, जहां पनामा के झंडे वाला मालवाहक जहाज 'ओसियन विनर' समुद्र में डूब गया। जहाज पर 24 क्रू मेम्बर सवार थे। दुर्घटना के बाद भारतीय तटरक्षक बल और भारतीय नौसेना ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 2 सदस्यों को सुरक्षित निकाला, जबकि शेष 22 सदस्य अभी भी लापता हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक पनामा-ध्वज वाला यह मालवाहक जहाज ओडिशा के बंदरगाह से लौह अयस्क का भार लेकर सिंगापुर के लिए रवाना हुआ था। समुद्र में आगे बढ़ने के दौरान जहाज अचानक अनियंत्रित होकर डूबने लगा और कुछ ही देर में भारतीय तटरक्षक बल से इसका संपर्क टूट गया। जहाज के डूबने के सटीक तकनीकी कारणों की जांच की जा रही है। जहाज पर कुल 24 चालक दल के सदस्य सवार थे, जिनमें-20 चीनी, 3 म्यांमार, 1 बांग्लादेशी नागरिक शामिल हैं।

मनुस्मृति कहती है कि महिला को कभी भी स्वतंत्र नहीं होना चाहिए

राहुल गांधी ने 'छात्रों की गूंज' कैंपेन में किया एक डायरेक्ट अंश या श्लोक कोट

नई दिल्ली,(ए)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी पिछले कई दिनों से 'छात्रों की गूंज' नाम से कैंपेन चला रहे हैं। वह अलग-अलग यूनिवर्सिटी और कॉलेज के छात्रों के साथ बातचीत कर रहे हैं। अलग-अलग मुद्दे उठा रहे हैं। उन्होंने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के बाद पुणे में छात्रों और युवाओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि महिलाएं भारत की सबसे बड़ी ताकत और संपत्ति हैं। उन्होंने तर्क दिया कि महिलाओं को केवल पुरुषों के साथ उनके रिश्तों के आधार पर नहीं आंका जाना चाहिए और न ही उन्हें पारंपरिक पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित रखा जाना चाहिए।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक राहु गांधी ने महिलाओं की स्वतंत्रता पर बात करते हुए मनुस्मृति का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि मनुस्मृति कहती है कि महिला को कभी भी स्वतंत्र नहीं होना चाहिए। राहुल ने मनुस्मृति का एक डायरेक्ट अंश या श्लोक कोट किया, 'बचपन में महिला अपने पिता की होती है, जवानी

में अपने पति की होती है, जब उसका पति मर जाता है, तो वह अपने बेटों की होती है। महिला को कभी भी स्वतंत्र नहीं होना चाहिए। राहुल ने कहा कि यह मनुस्मृति का सीधा उदाहरण यानी कोट है, और ये शब्द शर्मनाक हैं, क्योंकि ये शब्द कभी भी नहीं कहे जाने चाहिए थे। राहुल ने जिस मनुस्मृति का हवाला दिया, वो क्या है? क्या सच में महिलाओं को आजादी नहीं थी? यहां हम आपको इसके बारे में बता रहे हैं।

बता दें मनुस्मृति को मानव धर्मशास्त्र भी कहा जाता है। इसे राजा मनु का संविधान भी कहा जाता है। इसमें लोगों के व्यवहार के तरीके, कानून और सजा समेत कई नियम बताए गए हैं। इसमें कुल 12 चैप्टर हैं।

320 किमी रफ्तार से आ रहा टाइफून गैनेरी, तीन देशों में मचा सकता है तबाही

इसके प्रभाव से हैनान, दक्षिणी गुआंग्शी और ग्वांगडोंग में हो सकती है भारी बारिश

नई दिल्ली,(ए)। टाइफून गैनेरी के बनने के साथ ही इस साल जनवरी से अब तक कुल 20 तूफान बन चुके हैं। खास बात यह है कि जनवरी से अगस्त तक आमतौर पर करीब 13.4 तूफान बनते हैं, लेकिन इस साल अगस्त खत्म होने से पहले ही यह आंकड़ा आगे निकल गया है। इस साल जनवरी से अगस्त तक हर महीने तूफान बने और हर महीने की संख्या पिछले सालों के औसत से ज्यादा रही। गैनेरी शनिवार दोपहर ताइवान के ताइपे से करीब 320 किलोमीटर पूर्व-उत्तर-पूर्व में था। इसके केंद्र के पास हवा की रफ्तार करीब 18 मीटर प्रति सेकंड थी।

मौसम विभाग के मुताबिक यह तूफान करीब 35 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से उत्तर-पश्चिम दिशा में बढ़ सकता है। फिलहाल इसकी ताकत में ज्यादा बदलाव की

उम्मीद नहीं है। टाइफून नारा चीन के दक्षिणी हिस्सों में भारी बारिश का बड़ा खतरा पैदा कर रहा है। यह फिलहाल चीन के गुआंग्शी इलाके के पास बेइबू खाड़ी में है। नारा के रविवार रात तक इसी इलाके में बने रहने की संभावना है। इसके बाद यह धीरे-धीरे उत्तर-पूर्व और उत्तर की तरफ बढ़ सकता है।

रिपोर्ट के मुताबिक इसके प्रभाव से हैनान, दक्षिणी गुआंग्शी और ग्वांगडोंग में भारी से बेहद भारी बारिश हो सकती है। तीसरा तूफान सौडेल भी चिंता बढ़ा रहा है। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक जिस रास्ते से यह तूफान गुजर रहा है वहां समुद्र का तापमान काफी ज्यादा है। इससे आने वाले दिनों में इसकी ताकत तेजी से बढ़ सकती है। जानकारों ने आशंका जताई है कि सौडेल सुपर टाइफून की ताकत तक पहुंच सकता है। इसके बुधवार के आसपास रयूक्यू द्वीपों से गुजरकर पूर्वी चीन सागर की ओर बढ़ने का अनुमान है. तीनों तूफानों और दक्षिण-पश्चिमी मानसून के संयुक्त प्रभाव से चीन के कई तटीय इलाकों में भारी बारिश हो सकती है।

रिपोर्ट के मुताबिक गुआंग्शी, हैनान, दक्षिणी ताइवान, पूर्वी ग्वांगडोंग और दक्षिणी फुजियान समेत कई इलाकों में तेज बारिश का खतरा बना हुआ है। इसके अलावा ताइवान और जापान में भी इसका असर दिखेगा। मौसम विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि लगातार भारी बारिश से बाढ़, भूस्खलन और मडस्लाइड जैसी घटनाएं हो सकती हैं। समुद्री गतिविधियों, परिवहन और तटीय पर्यटन को लेकर भी लोगों को विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी गई है।

कश्मीर पर अमेरिकी सुर बदले: भारत का कद बढ़ा, पाक बेचैन

अमेरिका की कश्मीर नीति में लंबे समय से एक प्रकार की सावधानी रही है। वाशिंगटन सामान्यतः भारत और पाकिस्तान के बीच संवाद तथा शांतिपूर्ण समाधान की बात करता रहा है। अमेरिकी विदेश विभाग की पूर्व घोषित नीति भी जम्मू-कश्मीर में सामान्य स्थिति और राजनीतिक-आर्थिक स्थिरता की वापसी का समर्थन करती रही है। इसलिए गोर का श्रीनगर में जाकर जम्मू-कश्मीर को भारत का 'महत्वपूर्ण हिस्सा' कहना निश्चित रूप से भाषा के स्तर पर एक उल्लेखनीय परिवर्तन है। लेकिन इसे अमेरिका की पूरी कश्मीर नीति में तत्काल और औपचारिक परिवर्तन मानना भी जल्दबाजी होगी। किसी राजदूत का बयान और किसी सरकार की औपचारिक नीति में अंतर होता है। फिर भी कूटनीति में शब्दों का अपना महत्व होता है। विशेष रूप से तब, जब वही शब्द उस भूभाग में बोले जाएं जिसे पाकिस्तान दशकों से अंतरराष्ट्रीय विवाद के रूप में प्रस्तुत करता रहा है। इस दृष्टि से गोर का बयान भारत के लिए मनोवैज्ञानिक और कूटनीतिक दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण है।

- ललित गर्ग

अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर का 19 अगस्त 2026 को श्रीनगर में दिया गया यह बयान कि जम्मू-कश्मीर 'भारत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा' है, सामान्य कूटनीतिक टिप्पणी मानकर नजरअंदाज करने योग्य नहीं है। यह ऐसे समय आया है जब कश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान की धारणाओं के बीच अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार नए समीकरण बन रहे हैं। गोर ने जम्मू-कश्मीर की निरन्तर सुधर रही सुरक्षा स्थिति की बात कही और अमेरिकी यात्रा संबंधी परामर्श पर पुनर्विचार के संकेत भी दिए। पाकिस्तान ने इस बयान पर अमेरिका के शीर्ष राजनयिक को तलब कर तीखा विरोध दर्ज कराया। इस पूरे घटनाक्रम को केवल कश्मीर के संदर्भ में देखना पर्याप्त नहीं होगा। इसे भारत-अमेरिका संबंधों में आ रहे व्यापक परिवर्तन, दक्षिण एशिया की बदलती सामरिक संरचना और पाकिस्तान की घटती कूटनीतिक प्रभावशीलता के संदर्भ में समझना अधिक उचित होगा।

अमेरिका की कश्मीर नीति में लंबे समय से एक प्रकार की सावधानी रही है। वाशिंगटन सामान्यतः भारत और पाकिस्तान के बीच संवाद तथा शांतिपूर्ण समाधान की बात करता रहा है। अमेरिकी विदेश विभाग की पूर्व घोषित नीति भी जम्मू-कश्मीर में सामान्य स्थिति और राजनीतिक-आर्थिक स्थिरता की वापसी का समर्थन करती रही है। इसलिए गोर का श्रीनगर में जाकर जम्मू-कश्मीर को भारत का 'महत्वपूर्ण हिस्सा' कहना निश्चित रूप से भाषा के स्तर पर एक उल्लेखनीय परिवर्तन है। लेकिन इसे अमेरिका की पूरी कश्मीर नीति में तत्काल और औपचारिक परिवर्तन मानना भी जल्दबाजी होगी। किसी राजदूत का बयान और किसी सरकार की औपचारिक नीति में अंतर होता है। फिर भी कूटनीति में शब्दों का अपना महत्व होता है। विशेष रूप से तब, जब वही शब्द उस भूभाग में बोले जाएं जिसे पाकिस्तान दशकों से अंतरराष्ट्रीय विवाद के रूप में प्रस्तुत करता रहा है। इस दृष्टि से गोर का बयान भारत के लिए मनोवैज्ञानिक और कूटनीतिक दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण है।

इस बयान का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष जम्मू-कश्मीर की बदलती जमीन से जुड़ा है। गोर ने सुरक्षा व्यवस्था में सुधार का उल्लेख करते हुए यात्रा संबंधी अमेरिकी परामर्श में कमी लाने की संभावना जताई है। इसका अर्थ यह है कि वाशिंगटन अब कश्मीर को केवल सुरक्षा संकट या आतंकवाद की दृष्टि से देखने के बजाय पर्यटन, आर्थिक गतिविधियों और सामान्य जनजीवन की संभावनाओं वाले क्षेत्र के रूप में भी देख रहा है। यहीं से भारत-अमेरिका संबंधों की नई रोशनी दिखाई देती है। दोनों देशों के संबंध अब केवल व्यापार या रक्षा तक सीमित नहीं हैं। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव, समुद्री सुरक्षा, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, आपूर्ति-श्रृंखला और वैश्विक शक्ति-संतुलन जैसे विषयों ने भारत को अमेरिका के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया है। हालांकि दोनों देशों के बीच व्यापार और शुल्क जैसे मुद्दों पर मतभेद भी मौजूद हैं, फिर भी व्यापक सामरिक साझेदारी अपनी उपयोगिता बनाए हुए है। हाल में अमेरिकी विदेश मंत्री की भारत यात्रा का उद्देश्य भी तनावों के बीच संबंधों को सुदृढ़ करना और व्यापार तथा ऊर्जा सहयोग को आगे बढ़ाना था।

इसलिए कश्मीर पर अमेरिकी भाषा को भारत-अमेरिका संबंधों के व्यापक पुनर्संतुलन का हिस्सा मानना अधिक तार्किक होगा। अमेरिका के लिए भारत अब केवल दक्षिण एशिया का एक बड़ा देश नहीं, बल्कि एशिया में शक्ति-संतुलन का प्रमुख आधार है। भारत के लिए भी अमेरिका महत्वपूर्ण है, लेकिन भारत ने अपनी विदेश नीति को किसी एक शक्ति के साथ पूर्ण निर्भरता के बजाय रणनीतिक स्वायत्तता पर आधारित रखा है। यही कारण है कि भारत अमेरिका के साथ साझेदारी बढ़ाते हुए रूस, यूरोप, पश्चिम एशिया और अन्य शक्तियों के साथ भी अपने संबंध बनाए रखता है। कश्मीर के संदर्भ में यह घटनाक्रम पाकिस्तान के लिए निश्चित रूप से असहज करने वाला है। इस्लामाबाद ने गोर के बयान को अस्वीकार करते हुए कहा कि जम्मू-कश्मीर एक विवादित क्षेत्र है और उसका अंतिम निर्धारण होना बाकी है। पाकिस्तान ने इसे अमेरिका की पूर्व स्थिति से विचलन बताते हुए औपचारिक विरोध दर्ज कराया।

पाकिस्तान की समस्या यह है कि वह कश्मीर को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी विदेश नीति का केंद्रीय विषय बनाए रखना चाहता है, जबकि विश्व राजनीति की प्राथमिकताएं तेजी से बदल रही हैं। आतंकवाद, आर्थिक स्थिरता, चीन का बढ़ता प्रभाव, पश्चिम एशिया का संकट, समुद्री सुरक्षा और वैश्विक आपूर्ति-श्रृंखलाएं आज बड़ी शक्तियों की चिंता के केंद्र में हैं। ऐसे वातावरण में केवल कश्मीर के प्रश्न को बार-बार अंतरराष्ट्रीयकरण करने की पाकिस्तानी कोशिशों की प्रभावशीलता सीमित होती जा रही है। भारत ने दूसरी ओर लगातार यह रेखांकित किया है कि जम्मू-कश्मीर से जुड़े विषय भारत की संप्रभुता और द्विपक्षीय संबंधों के दायरे में आते हैं। गोर का श्रीनगर दौरा स्वयं इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि एक प्रमुख अमेरिकी राजनयिक ने जम्मू-कश्मीर की यात्रा की, वहां के निर्वाचित नेतृत्व से मुलाकात की और क्षेत्र की सुरक्षा तथा आर्थिक संभावनाओं पर सकारात्मक टिप्पणी की। यह पाकिस्तान की उस कोशिश के विपरीत है जिसमें वह कश्मीर को केवल विवाद और अस्थिरता के चश्मे से प्रस्तुत करना चाहता है।

संपादकीय

ग्वालियर में युवा नेतृत्व की नई पारी
नियुक्तियां नहीं, भविष्य की राजनीति का संकेत

ग्वालियर की राजनीति में भारतीय जनता युवा मोर्चा की हालिया संगठनात्मक नियुक्तियों ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा किया है कि आने वाले वर्षों की भाजपा की राजनीति आखिर किन युवा चेहरों के इर्द-गिर्द आकार लेगी। जुलाई में ग्वालियर नगर की कमान शिवम राजावत को सौंपी गई और अब ग्वालियर ग्रामीण में शिवराज यादव को जिलाध्यक्ष तथा मनोज गुर्जर को जिला महामंत्री की जिम्मेदारी दी गई है। प्रदेश स्तर पर हालिया सूची में 12 जिलों में जिलाध्यक्ष और नौ जिलों में जिला महामंत्री घोषित किए गए हैं। इन नियुक्तियों को केवल पदों का बंटवारा मानना शायद जल्दबाजी होगी। भाजपा की संगठनात्मक राजनीति में युवा मोर्चा लंबे समय से नई पीढ़ी को तैयार करने की प्रयोगशाला रहा है। यहां मिलने वाली जिम्मेदारी का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यही कार्यकर्ता आगे चलकर मंडल, जिला, विधानसभा और उससे आगे की राजनीति में भूमिका निभाते हैं। ऐसे में ग्वालियर में दो अलग-अलग संगठनात्मक क्षेत्रों के लिए युवा चेहरों का चयन भविष्य की राजनीतिक जमीन तैयार करने की कवायद के रूप में भी देखा जा सकता है। लेकिन सवाल केवल यह नहीं है कि अध्यक्ष कौन बना? असली सवाल यह है कि अब ये युवा नेता करेंगे क्या? राजनीति में नियुक्ति आसान पड़ाव हो सकती है, लेकिन स्वीकार्यता बनाना कठिन काम है। किसी भी युवा पदाधिकारी की असली परीक्षा बधाई संदेशों, स्वागत समारोहों और सोशल मीडिया की तस्वीरों के बाद शुरू होती है। युवाओं के बीच संगठन की पकड़ मजबूत करना, बूथ स्तर तक कार्यकर्ताओं को जोड़ना, नए चेहरों को अवसर देना और संगठन को गुटबाजी से ऊपर रखकर चलाना यही किसी नियुक्ति की वास्तविक सफलता का पैमाना होगा। ग्वालियर जैसे राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण शहर और ग्रामीण क्षेत्र में यह चुनौती और बड़ी है। यहां युवा राजनीति केवल नारे और कार्यक्रमों तक सीमित नहीं रह सकती। रोजगार, शिक्षा, नशे की समस्या, खेल सुविधाएं, डिजिटल अवसर, ग्रामीण युवाओं की समस्याएं और स्थानीय प्रशासन से जुड़े मुद्दे ऐसे विषय हैं, जिन पर युवा मोर्चा यदि जमीन पर सक्रिय दिखाई देता है तो उसकी राजनीतिक प्रासंगिकता स्वतः बढ़ेगी। हालांकि, हर राजनीतिक नियुक्ति के साथ दावेदारों और समर्थकों की अपेक्षाएं भी जुड़ी होती हैं। संगठन के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही होगी कि नियुक्ति के बाद असंतुष्ट कार्यकर्ताओं को साथ कैसे रखा जाए। अध्यक्ष और महामंत्री की जोड़ी तभी प्रभावी मानी जाएगी, जब वह व्यक्तिगत समर्थक समूह के बजाय पूरे संगठन को साथ लेकर चले युवा नेतृत्व को यह भी समझना होगा कि आज की राजनीति केवल मंच और पोस्टर की राजनीति नहीं है। सोशल मीडिया के दौर में कार्यकर्ता की सक्रियता, जनता से सीधा संवाद और मुद्दों पर तत्काल प्रतिक्रिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। युवा मोर्चा यदि डिजिटल और जमीनी दोनों मोर्चों पर समान ताकत के साथ काम करता है तो ग्वालियर की राजनीति में नई कार्यशैली दिखाई दे सकती है।इन नियुक्तियों का सबसे बड़ा संदेश शायद यही है कि संगठन ने युवाओं को जिम्मेदारी देने का रास्ता खुला रखा है। अब बारी उन युवाओं की है कि वे इस भरोसे को कितनी दूर तक ले जाते हैं।क्योंकि राजनीति में पद एक अवसर देता है, लेकिन पहचान काम से बनती है।ग्वालियर के युवा मोर्चा की नई टीम के सामने अब स्वागत समारोहों से आगे निकलकर संगठन को जमीन पर मजबूत करने की चुनौती है। आने वाला समय बताएगा कि ये नियुक्तियां केवल नए नाम जोड़ती हैं या वास्तव में ग्वालियर की भाजपा की अगली पीढ़ी तैयार करती हैं।यही इन नियुक्तियों की सबसे बड़ी राजनीतिक परीक्षा भी होगी और सबसे बड़ा अवसर भी।

पेपर लीक से पटना राजभवन तक, छात्रों के गुस्से में छिपी राजनीति का सच

-कांतिलाल मांडोत

बिहार की राजनीति में छात्रों, परीक्षा और रोजगार का मुद्दा एक बार फिर सड़क पर है। बुधवार को नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनता दल ने पटना में जेपी गोलंबर से राजभवन तक मार्च निकाला। करीब पांच किलोमीटर के इस मार्च में बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता और समर्थक शामिल हुए। रास्ते में बैरिकेडिंग तोड़ने की कोशिश हुई, पुलिस ने वाटर कैनन का इस्तेमाल किया और बाद में तेजस्वी यादव तथा मीसा भारती को हिरासत में लिया गया। करीब एक घंटे बाद तेजस्वी को छोड़ दिया गया। इस दौरान पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच धक्का-मुक्की तथा कुछ कार्यकर्ताओं द्वारा पुलिस की ओर पानी की बोतलें फेंके जाने की घटनाएं भी सामने आईं।

लेकिन इस पूरे घटनाक्रम को केवल एक राजनीतिक मार्च के रूप में देखना अधूरा होगा। इसके पीछे बिहार के छात्रों का असंतोष, प्रतियोगी परीक्षाओं की विश्वसनीयता पर उठते सवाल, रोजगार की चिंता और उससे कहीं बड़ी राजनीतिक प्रतिस्पर्धा छिपी हुई है। असली सवाल यही है कि आखिर पेपर लीक और परीक्षा में कथित अनियमितताओं का मुद्दा हर राजनीतिक दल इतनी ताकत से क्यों उठा रहा है? क्या यह केवल छात्रों के भविष्य की चिंता है या इसके पीछे चुनावी राजनीति का भी बड़ा गणित काम कर रहा है?

सीवान में छात्र प्रदर्शन के दौरान पुलिस की ओर से एके-47 से फायरिंग

का मामला इस बहस को और गंभीर बना चुका है। उपलब्ध घटनाक्रम के अनुसार 25 जुलाई को प्रदर्शन के दौरान एक पुलिसकर्मी ने एके-47 से गोलियां चलाईं। एक अन्य जवान के सर्विस रिवॉल्वर से फायरिंग करने की बात भी सामने आई। इसके बाद मामला राजनीतिक विवाद का विषय बन गया। राजद सांसद मनोज झा ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की। संबंधित पुलिसकर्मी को निलंबित किया गया और बाद में प्रशासनिक स्तर पर भी बदलाव हुए। सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामे में एके-47 से चार राउंड हवाई फायरिंग होने की बात स्वीकार की, लेकिन यह भी कहा कि छात्रों को एके-47 की गोली नहीं लगी।

यहीं से मामले का सबसे बड़ा सस्पेंस सामने आता है। एक तरफ पुलिस फायरिंग की घटना स्वीकार की जाती है, दूसरी तरफ सरकार का कहना है कि छात्रों को गोली नहीं लगी। राजनीतिक दल इसे छात्रों पर गोली चलाने की घटना के रूप में पेश कर रहे हैं, जबकि सरकार फायरिंग को अलग संदर्भ में रख रही है। इसी अंतर ने मामले को केवल कानून-व्यवस्था का प्रश्न नहीं रहने दिया, बल्कि इसे सरकार और विपक्ष के बीच राजनीतिक संघर्ष का मुद्दा बना दिया है।

तेजस्वी यादव का राजभवन मार्च इसी राजनीतिक माहौल का विस्तार है। उन्होंने छात्रों के समर्थन में संघर्ष जारी रखने और युवाओं को रोजगार मिलने तक सरकार के खिलाफ आवाज उठाने की बात कही। उनका यह कहना कि वे जेल से डरने वाले नहीं हैं और सत्ता में आया व्यक्ति एक दिन सत्ता से बाहर जाता है, बताता है कि आंदोलन को राजद केवल छात्र मुद्दे तक सीमित नहीं रखना चाहता। पार्टी इसे सरकार की कार्यशैली, रोजगार और शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ व्यापक राजनीतिक अभियान में बदलना चाहती है।

दूसरी ओर, सत्ता पक्ष के लिए यह मुद्दा कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। बिहार में युवाओं की बड़ी आबादी प्रतियोगी परीक्षाओं और सरकारी नौकरियों पर निर्भर रहती है। परीक्षा की तारीखों में बदलाव, कथित पेपर लीक, नकल, भर्ती प्रक्रिया में देरी या परीक्षा की निष्पक्षता पर सवाल सीधे युवा मतदाता की चिंता से जुड़ते हैं।

राशिफल

शुभ संवत 2083, शाके 1948, सौम्य गोष्ठ, श्रावण शुक्ल पक्ष, वर्षा ऋतु, गुरु उदय, पूर्वे शुक्रोदय, पश्चिमी तिथि, एकादशी, सोमवार, मूल नक्षत्रे, विव योगे, वलकरणे, धनु की चंद्रमा, पुत्रदा एकादशी व्रत वैष्णव, मूल समाप्त 6/4 सांयन कन्यायाम तथापि पूर्व दिशा की यात्रा शुभ उत्तम फलदायी होगी7

आज जन्म लिए बालक का फल........

आज जन्म लिया बालक योग्य, बुद्धिमान, चपल, चतुर किन्तु जिद्दी-हठी, स्वतंत्र विचार का मुहफट, उद्देश्यपूर्ण करने वाला, बड़ा कुशल, उद्यमी, वक्ता-अधिवक्ता, राजनीतिज्ञ तथा सैनिक, सिपाही, कमांडर होगा।

मेष :- आशानुकूल सफलता का हर्ष होगा, दैनिक कार्यगति में सुधार होगा, कार्ययोजना अवश्य बनेगी।

वृष :- समय की अनुकूलता से लाभांवित होंगे, विवादग्रस्त होने से अवश्य बचें।

मिथुन :- मनोबल उत्साह वर्धक होगा, इष्ट मित्र सुखवर्धक रहें, विशेष कार्य अवश्य ही बनेंगे।

कर्क :- स्वास्थ्य हानि से बेचैनी, मानसिक उद्विघ्नता, शरीर क्षमता कमजोर पड़ेगी, ध्यान रखें।

सिंह :- आशानुकूल सफलता का हर्ष, कार्यवृत्ति में सुधार के योग बनेंगे, समय का ध्यान अवश्य रखें।

कन्या :- समय पर सोचे हुए कार्य बनेंगे किन्तु कुछ बाधा व विलम्ब अवश्य होगा।

तुला :- मानसिक क्लेश व अशांति, मनोवृत्ति मलिन रहे तथा विरोधी तत्व परेशान अवश्य करें।

वृश्चिक :- आर्थिक योजना पूर्ण हों, सफलता के साधन जुटायें, कार्य संतोष की चिन्ता होगी।

धनु :- कार्य योजना फलीभूत होगी, आशानुकूल सफलता से हर्ष होगा, रुके कार्य बनेंगे।

मकर :- इष्ट मित्रों से सुख-ऐश्वर्य की प्राप्ति, स्त्री वर्ग से हर्ष, तनाव तथा क्लेश, अशांति बनेगी।

कुम्भ :- मान-प्रतिष्ठा, प्रभुत्व वृद्धि, कार्य कुशलता से संतोष एवं रुके कार्य बनेंगे।

मीन :- दैनिक कार्यगति में सुधार, प्रत्येक कार्य में बाधा उद्विघ्नता अवश्य बनेगी।

आवारापन 2 की कामयाबी का जलवा: निर्माता विशेष भट्ट ने बताई दिशा पाटनी को चुनने की वजह

इन दिनों सिनेमाघरों में आवारापन 2 ने धूम मचा रखी है, जिसने अपनी दमदार कहानी और इमरान हाशमी व दिशा पाटनी की बिल्कुल नई जोड़ी की ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री से दर्शकों का दिल जीत लिया है। एक रोमांटिक ड्रामा के तौर पर यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन कर रही है और हर तरफ इसकी चर्चा है। इस बीच, फिल्म के निर्माता विशेष भट्ट ने खुलासा किया है कि उन्होंने मुख्य अभिनेत्री के तौर पर दिशा पाटनी को क्यों चुना, यह बताते हुए कि दिशा का अब तक का सफर ही उन्हें इस किरदार के लिए बिल्कुल सही बनाता था।

विशेष भट्ट ने हाल ही में खुलासा किया है कि उन्होंने दिशा पाटनी को इस अहम किरदार के लिए क्यों चुना। वह कहते हैं, इमरान और दिशा को स्क्रीन पर साथ देखना बेहद दिलचस्प है, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि इससे पहले दोनों को एक साथ देखा गया है। दिशा का अपना एक शानदार काम है। मैंने उन्हें मोहित सूरी की मलंग में देखा था और मैं उनसे 2012 या 2013 में तब मिला था, जब उन्होंने अपने करियर की अभी शुरुआत ही की थी। दिशा पाटनी के बारे में विशेष भट्ट का मानना है कि उनमें उनकी खूबसूरती से कहीं ज्यादा गहराई है। वह आगे बताते हैं, पिछले कुछ सालों में मुझे हमेशा लगा है कि उनका चेहरा बेहद आकर्षक है और उनकी अपनी एक खास पर्सनैलिटी है। वह जैसी हैं और हमें इस किरदार के लिए जैसी जरूरत थी, जिस तरह से यह किरदार फिल्म में आगे बढ़ता है, उसके हिसाब से वह इस भूमिका के लिए बिल्कुल सही लग रही थीं। यह एक बहुत ही मॉडर्न और आज के समय से जुड़ा हुआ किरदार है, जो दूसरे देश में रह रहा है। यह किरदार श्रीया सरन जैसा नहीं है। दोनों के बीच जानबूझकर एक अलग तरह का कॉन्ट्रास्ट रखा गया है।

निस्संदेह, दिशा पाटनी को फिल्म में कास्ट करने का यह फैसला आवारापन 2 के लिए बेहद फायदेमंद साबित हुआ है। इससे न सिर्फ फिल्म की विरासत को बनाए रखने में मदद मिली, बल्कि दर्शकों की उम्मीदों पर खरा उतरने में भी कामयाबी हासिल हुई। इस साल ओ' रोमियो और वेलकम टू द जंगल जैसी फिल्मों के बाद, दिशा पाटनी एक बार फिर बॉक्स ऑफिस पर लकी चार्म साबित हुई हैं और फिल्म की व्यावसायिक सफलता में उनकी अहम भूमिका स्पष्ट रूप से नजर आ रही है।

तारा सुतारिया ने तुम ही आना जैम सत्र को मिले प्यार के लिए आभार जताया

अभिनेत्री तारा सुतारिया ने बुधवार को अपने सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए तुम ही आना जैम सेशन वीडियो को प्रशंसकों से मिल रहे भारी प्यार के लिए आभार व्यक्त किया। यह वीडियो कुछ ही घंटों में पांच मिलियन से अधिक बार देखा जा चुका है, जिसने अभिनेत्री को भावुक कर दिया है। तारा सुतारिया ने अपने फैंस के इस बेमिसाल स्नेह पर खुशी जाहिर की है और भविष्य में ऐसे और भी म्यूजिकल वीडियो साझा करने की इच्छा जताई है।

इस वीडियो में तारा अपने घर पर 2019 की फिल्म मरजावां के बेहद लोकप्रिय गाने तुम ही आना को गुनगुनाती नजर आ रही हैं। काले रंग के कपड़े पहने हुए, वह आंखें बंद करके पूरी तल्लीनता से इस गाने का लुत्फ उठा रही थीं, मानो वह संगीत की गहराई में खो गई हों। उनका यह कैजुअल और दिलकश अंदाज़ प्रशंसकों को खूब भाया, और वीडियो देखते ही देखते वायरल हो गया।

प्रशंसकों की तरफ से मिल रहे इस प्यार से अभिभूत तारा ने लिखा, कुछ घंटों पहले इस वीडियो को पोस्ट किया था और अब देखते ही देखते 50 लाख से ज्यादा व्यूज आ गए। अगर आपको मिडनाइट और भी जैम वीडियो चाहिए, तो इसे और भी शेयर करें। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि यह वीडियो मंगलवार देर रात को साझा किया गया था और इसकी लोकप्रियता ने उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया है, जो इस बात का प्रमाण है कि संगीत और उनकी आवाज़ का जादू दर्शकों पर अब भी बरकरार है।

तुम ही आना सिर्फ एक गाना नहीं, बल्कि एक बेहद लोकप्रिय और भावुक रोमांटिक गीत है जिसने दर्शकों के दिलों में अपनी जगह बनाई है। जुबिन नौटियाल की जादुई आवाज से सजे इस गीत का संगीत पायल देव ने तैयार किया है, और इसके बोल कुणाल वर्मा ने लिखे हैं। फिल्म मरजावां में यह गाना सिद्धार्थ मल्होत्रा और तारा सुतारिया के किरदारों के बीच के गहरे प्यार और बिछड़ने के दर्द को बखूबी दर्शाता है। रिलीज के साथ ही यह चार्टबस्टर बन गया था और आज भी लोगों के पसंदीदा भावनात्मक गीतों में शुमार है।

हिंदी रोमांटिक एक्शन ड्रामा फिल्म मरजावां का निर्देशन और लेखन मिलाप झावेरी ने किया था। इसमें सिद्धार्थ मल्होत्रा, रितेश देशमुख, तारा सुतारिया और रकुल प्रीत सिंह ने मुख्य भूमिकाएं निभाई थीं। फिल्म रघु (सिद्धार्थ) की कहानी है, जिसे मुंबई के एक माफिया (अन्ना) ने पाला-पोसा है और वह उसका सबसे वफादार गुंडा है। कहानी में मोड़ तब आता है जब रघु को जोया (तारा) से प्यार हो जाता है। फिल्म में रितेश देशमुख ने एक बौने खलनायक विष्णु की दमदार भूमिका निभाई थी, जो रघु से ईर्ष्या करता है और कहानी में ट्विस्ट लाता है। इस फिल्म और विशेष रूप से तुम ही आना गाने ने तारा सुतारिया को दर्शकों के बीच एक अलग पहचान दिलाई

महाकाली में शुक्राचार्य की भूमिका में नजर आयेंगे अक्षय खन्ना

फिल्ममेकर प्रशांत वर्मा, जिन्होंने हनु-मान की जबरदस्त सफलता से भारतीय सिनेमा में अपने बहुप्रतीक्षित यूनिवर्स की नींव रखी, अब दर्शकों को एक नई, भव्य दुनिया में ले जाने के लिए तैयार हैं। उनके अगले अध्याय महाकाली से अभिनेता अक्षय खन्ना का असुरों के गुरु शुक्राचार्य के रूप में दिलचस्प अवतार 24 अगस्त को पहली बार सामने आने वाला है। आरकेडी स्टूडियोज़ द्वारा हाल ही में साझा की गई एक रहस्यमयी पोस्ट, 24 अगस्त - द एंड बिगिन्स, ने इस बहुप्रतीक्षित रिवील को लेकर उत्साह और बढ़ा दिया है। बॉलीवुड में यह खबर तेजी से फैल रही है और प्रशंसकों के बीच उत्सुकता चरम पर है।

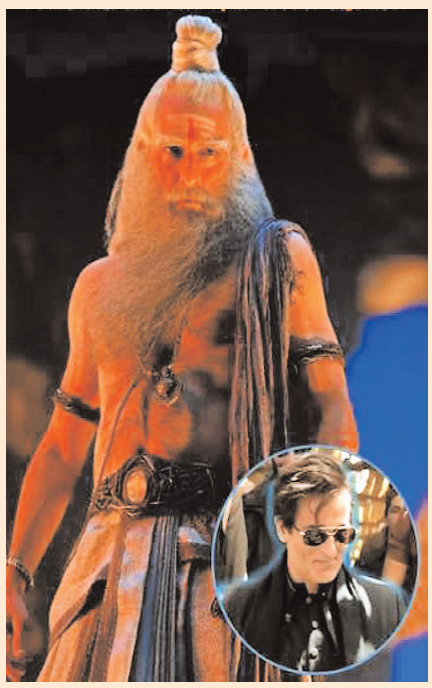

यह नई झलक न केवल दर्शकों को इस विशाल भारतीय इतिहासनिष्ठ सिनेमाई अनुभव की पहली वास्तविक झलक देगी, बल्कि अक्षय खन्ना के असाधारण ट्रांसफॉर्मेशन को भी उजागर करेगी। अपने चुने हुए किरदारों से लगातार दर्शकों को चौंकाने के लिए पहचाने जाने वाले अक्षय खन्ना इस बार अपने बदलाव को एक नए स्तर पर ले जाते दिखेंगे। धुरंधर जैसी फिल्मों में अपनी शानदार मौजूदगी के बाद, अभिनेता का यह नया रूप लगभग पहचान में ही नहीं आएगा, जैसा कि शुक्राचार्य के रूप में उनके पहले लीक हुए लुक ने पहले ही काफी चर्चा बटोरी है। अब 24 अगस्त को उनकी पहली झलक से दर्शकों की उत्सुकता कई गुना बढ़ने की उम्मीद है। पुराणों के अनुसार, असुरों के गुरु शुक्राचार्य शक्ति, ज्ञान और जटिल व्यक्तित्व से परिभाषित एक बेहद महत्वपूर्ण पौराणिक पात्र हैं। ऐसे में, अक्षय खन्ना द्वारा निभाए जा रहे इस गंभीर किरदार में उनकी गहराई और प्रशांत वर्मा का विजुअल ट्रीटमेंट इसे उनके सिनेमाई यूनिवर्स के अनुरूप एक भव्य स्तर प्रदान करेगा।

हनु-मान की ऐतिहासिक सफलता के बाद से ही दर्शक यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि प्रशांत वर्मा अपने सिनेमाई यूनिवर्स में आगे क्या लेकर आएँगे। हनु-मान ने न सिर्फ फिल्ममेकर की बड़े पैमाने पर भारतीय कहानियों को जीवंत करने की क्षमता को स्थापित किया, बल्कि विजुअल डिटेलिंग और विश्व-निर्माण (वर्ल्ड-बिल्डिंग) के लिए भी एक नया मानक तय किया। अब, 24 अगस्त को अक्षय खन्ना की पहली झलक के साथ, दर्शकों को महाकाली की दुनिया की पहली वास्तविक झांकी मिलेगी।

अब फिल्म प्रलय में नजर आयेंगे रणवीर सिंह

बॉलीवुड अभिनेता रणवीर सिंह ने अपनी अगली फिल्म प्रलय की शूटिंग मुंबई में शुरू कर दी है। यह एक एंड-ऑफ-द-वर्ल्ड के संकट पर आधारित एक्शन थ्रिलर फिल्म है। मेकर्स के अनुसार, फिल्म की कहानी मुंबई शहर की पृष्ठभूमि पर सेट है, जिसमें तबाही के बीच इंसानी जिंदगी को बचाने की लड़ाई दिखाई जाएगी। इस प्रोजेक्ट में रणवीर सिंह मुख्य भूमिका निभाने के साथ-साथ को-प्रोड्यूसर की जिम्मेदारी भी संभाल रहे हैं। फिल्म में उनके साथ साउथ की लोका फेम एक्ट्रेस कल्याणी प्रियदर्शन मुख्य किरदार में नजर आएंगी। रियल लोकेशन्स पर होगी शूटिंग, महीनों चला प्री-प्रोडक्शन फिल्म का निर्देशन स्कैम 1992: द हर्षद मेहता स्टोरी और लुटेरे से पहचान बनाने वाले निर्देशक जय मेहता कर रहे हैं।

चीन के शंघाई में आईएसयू फिगर स्केटिंग मुकाबले में भाग लेती हुई पोलिना शेहशालेवा व इगोर कर्ननोखोव।

वॉन ने मौजूदा पाकिस्तान टीम को बताया डरपोक

इंग्लैंड से शर्मनाक हार के बाद कड़ी आलोचना

लंदन (ए)। इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट मैच में पाकिस्तान क्रिकेट टीम को करारी हार का सामना करना पड़ा है। मेजबान इंग्लैंड ने पाकिस्तान को पारी और 103 रन से हराकर तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली है। पाकिस्तान का प्रदर्शन बल्लेबाजी, गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण तीनों विभागों में निराशाजनक रहा, और टीम महज तीन दिन के भीतर दोनों पारियों में ऑलआउट हो गई। इस शर्मनाक हार के बाद इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने पाकिस्तानी टीम के प्रदर्शन की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि उन्होंने अपने क्रिकेट करियर में कभी इतनी डरपोक टीम नहीं देखी। पाकिस्तान की टीम पहली पारी में केवल 170 रन पर सिमट गई थी। इसके बाद इंग्लैंड ने मजबूत बल्लेबाजी करते हुए अपनी पहली पारी में 409 रन बनाए और 238 रन की बड़ी बढ़त हासिल कर ली। पाकिस्तान के सामने दूसरी पारी में मुकाबले में वापसी करने की बड़ी चुनौती थी,

लेकिन उनकी बल्लेबाजी एक बार फिर पूरी तरह विफल रही। पूरी टीम 37.3 ओवर में सिर्फ 135 रन बनाकर ढेर हो गई और इंग्लैंड ने मुकाबला आसानी से अपने नाम कर लिया।

पाकिस्तान की ओर से पहले टेस्ट में अब्दुल्ला शफीक ने 61 रन की संघर्षपूर्ण पारी खेली, लेकिन उनके अलावा कोई भी बल्लेबाज टीम को मजबूत स्थिति में नहीं पहुंचा सका। इंग्लैंड के गेंदबाजों के सामने पाकिस्तानी बल्लेबाज लगातार संघर्ष करते नजर आए। गेंदबाजी में भी पाकिस्तान विपक्षी बल्लेबाजों पर पर्याप्त दबाव बनाने में सफल नहीं रहा, जबकि क्षेत्ररक्षण में हुई गलतियों ने टीम की मुश्किलें और बढ़ा दीं। माइकल वॉन ने पाकिस्तान के प्रदर्शन पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि टीम को पूरी तरह रौंद दिया गया और दोनों टीमों के बीच कौशल तथा स्तर का अंतर साफ दिखाई दिया। उनके अनुसार, पाकिस्तान की रणनीति प्रभावी नहीं थी और मौजूदा टीम में वह आक्रामकता तथा संघर्ष का जज्बा नजर नहीं आया, जिसके लिए पाकिस्तानी क्रिकेट पहले जाना जाता रहा है। वॉन ने कहा कि पिछली कई पाकिस्तानी टीमों को देखने के बाद मौजूदा टीम को इस तरह कमजोर स्थिति में देखना निराशाजनक है। पाकिस्तान इंग्लैंड दौरे पर कुछ बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद के साथ पहुंचा था, लेकिन पहले टेस्ट में खिलाड़ी लय हासिल नहीं कर सके। इंग्लैंड ने इस जीत के साथ सीरीज में शुरुआती बढ़त बना ली है। अब दोनों टीमों के बीच दूसरा टेस्ट गुरुवार 27 अगस्त से लॉर्ड्स में खेला जाएगा, जहां पाकिस्तान पर वापसी करने का भारी दबाव होगा। टीम के लिए यह मुकाबला सिर्फ सीरीज बराबर करने का नहीं, बल्कि अपने आत्मविश्वास और प्रतिष्ठा को बचाने का भी महत्वपूर्ण अवसर होगा।

एफआईएच हॉकी विश्वकप के दूसरे दौर में नीदरलैंड्स ने भारतीय टीम को 3-1 से हराया

एम्सटलवीन (ए)। भारतीय पुरुष हॉकी टीम को एफआईएच हॉकी विश्वकप के दूसरे दौर में नीदरलैंड्स ने 3-1 से हरा दिया। ओलंपिक विजेता के खिलाफ हुए मैच में भारतीय टीम ने काफी प्रयास किया पर वह जीत हासिल करने में विफल रही। इस हार के साथ भारतीय टीम के लिए टूर्नामेंट में आगे जान बेहद कठिन हो गया है। भारतीय टीम ने इस मैच में अच्छी शुरुआत की पर वह डच टीम के सामने टिक नहीं पायी। मैच के पहले और दूसरे क्वार्टर में भारतीय रक्षापंक्त ने डच आक्रमक को विफल करने में सफलता हासिल की पर इसके बाद वह इसे बरकरार नहीं रख पायी। मध्यांतर तक स्कोर 0-0 की बराबरी पर था पर इसके बादा नीदरलैंड्स के खिलाड़ी गोल करने में सफल रहे।

हाफटाइम के बाद, नीदरलैंड्स ने अपनी गति और बढ़ा दी। भारतीय टीम ने भी शुरुआत में कुछ हमले किये पर वह उन्हें गोल में नहीं बदल पायी। मैच के 41वें मिनट में डच टीम ने एक गोल कर स्कोर 1-0 से आगे कर दिया। नीदरलैंड्स के खिलाड़ी डुको टेलजेनकम्प ने भारतीय रक्षापंक्ति की कमी का लाभ उठाते हुए एक शानदार फील्ड गोल कर अपनी टीम को 1-0 की बड़ी बढ़त दिलाई। इस मैच का अंतिम और चौथा क्वार्टर बेहद रोमांचक और नाटकीय रहा। 1-0 से पिछड़ने के बाद, भारतीय टीम ने बराबरी के प्रयास शुरु कर दिये। डच टीम ने इसी बीच एक गोल दाग दिया। इससे स्कोर 2-0 हो गया और भारत की मुश्किलें बढ़ गईं। वहीं भारतीय टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने 52वें मिनट में एक गोल कर स्कोर 2-1 पर पहुंच दिया। इसके तीन मिनट बाद ही 55वें मिनट डच खिलाड़ियों ने एक गोल कर स्कोर 3-1 पहुंचा दिया। इसके बाद टीम के लिए वापसी असंभव हो गयी।

भारतीय टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी शुरु की

कोलंबो (ए)। भारत और मेजबान श्रीलंकाई क्रिकेट टीम के बीच रविवार से युहां दूसरा और अंतिम क्रिकेट टेस्ट मैच शुरु हुआ। इसमें भारतीय टीम टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी। इसमें भारतीय टीम ने एक बदलाव करते हुए अनुभवी स्पिनर कुलदीप यादव की जगह पर स्पिनर सारांश जैन को उतारा। इस मैच के साथ ही 33 साल की उम्र में सारांश ने अपना टेस्ट डेब्यू किया। अनुभवी ऑलराउंडर रविन्द्र जडेजा ने उन्हें टेस्ट कैप दी। वहीं श्रीलंका की ओर से कामिल मिशारा ने अपना डेब्यू किया। दोनो ही टीमों के अंतिम ग्यारह खिलाड़ी इस प्रकार हैं:

श्रीलंका : धनंजय डी सिल्वा (कप्तान), लाहिरू उदारा, कामिल मिशारा, पसिंदु सोरियाबंदरा, कामिंदू मेंडिस, सोनल दिनुशा, निरोशन डिकवेला (विकेटकीपर), केशरा नुवांथा, प्रभात जयसूर्या, लाहिरू कुमारा, असिथा फर्नांडो।

भारत : शुभमन गिल (कप्तान), जायसवाल, केएल राहुल, देवदत पडिक्कल, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, ध्रुव जुरेल, सारांश जैन, मानव सुथार, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा!

सारांश को जडेजा ने सौंपी टेस्ट कैप, सबसे अधिक उम्र में डेब्यू करने वाले भारतीय बने

कोलंबो (ए)। 33 साल की उम्र में मध्यप्रदेश के ऑफ स्पिनर सारांश जैन ने भारतीय टीम की ओर से टेस्ट डेब्यू किया है। सारांस को ऑलराउंडर रविन्द्र जडेज ने डेब्यू कैप सौंपी। सारांश 33 साल और 145 दिन की उम्र में भारतीय टीम की ओर से टेस्ट डेब्यू करने वले सबसे उम्रदराज टेस्ट खिलाड़ी बन गये हैं।इससे पहले साल 2000 में विकेटकीपर सबा करीम ने 32 साल 362 दिन की उम्र में ढाका में बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट डेब्यू किया था।

सारांश को घरेलू क्रिकेट में अच्छे प्रदर्शन के कारण टीम में जगह मिली है। सारांश को अंतिम ग्यारह में चाइनामैन गेंदबाज कुलदीप यादव की जगह शामिल किया गया है। कुलदीप का प्रदर्शन पहले मैच में अच्छा नहीं रहा था। पिछले रणजी ट्रॉफी सत्र में

उन्होंने मध्य प्रदेश के लिए गेंद और बल्ले दोनों से बेहतरीन प्रदर्शन किया था। उन्होंने गत सात्र में 518 रन बनाने के साथ-साथ 30 विकेट भी अपने नाम किए थे।

गौरतलब है कि सारांश का फर्स्ट क्लास करियर बेहद प्रभावशाली रहा है। उन्होंने साल 2014 में मध्य प्रदेश की ओर से अपना पहला फर्स्ट क्लास मैच खेला था। अब तक खेले गए कुल 54 फर्स्ट क्लास मैचों में, सारांश ने 31.75 की औसत से कुल 2223 रन बनाए हैं, जिसमें 14 अर्धशतक और 2 शतक शामिल हैं।

ब्राजील के खिलाफ मैच पर बाइचुंग भूटिया ने उठाए सवाल

बोले- 90 मिनट के मुकाबले पर करोड़ों खर्च करना गलत

नई दिल्ली (ए)। भारत और पांच बार की विश्व चैंपियन ब्राजील के बीच 3 अक्टूबर को कोलकाता के साल्ट लेक स्टेडियम में होने वाले हाई-प्रोफाइल फ्रेंडली मैच को लेकर फुटबॉल प्रशंसकों में जबरदस्त उत्साह है। ब्राजील जैसी दिग्गज टीम के खिलाड़ियों को भारत में खेलते देखने का मौका निश्चित रूप से देश के युवा फुटबॉल प्रेमियों के लिए खास होगा। हालांकि, भारतीय फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान बाइचुंग भूटिया ने इस मुकाबले के आयोजन पर गंभीर सवाल उठाते हुए प्रशंसकों से मैच के बहिष्कार की अपील की है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, ब्राजील के भारत दौरे और मुकाबले के आयोजन पर करीब 60 से 70 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। भूटिया का कहना है कि भारतीय फुटबॉल को इस समय बड़े प्रदर्शनात्मक मुकाबले की बजाय जमीनी स्तर और क्लब फुटबॉल में निवेश की जरूरत है। उनके अनुसार 90 मिनट के मैच पर इतनी बड़ी

राशि खर्च करना संसाधनों का सही इस्तेमाल नहीं है। उन्होंने प्रशंसकों से मुकाबले का बहिष्कार कर आयोजकों और फुटबॉल महासंघ को संदेश देने की अपील की। भूटिया ने कहा कि अगर प्रशंसक मैच का बहिष्कार करते हैं तो यह बड़ा संदेश होगा और भविष्य में आयोजकों तथा महासंघों को ऐसे फैसले लेने से पहले दो बार सोचना पड़ेगा।

ब्राजील के मैच को प्राथमिकता देने के लिए भारत के पहले प्रस्तावित फीफा आसियान कप से हटने के फैसले पर भी भूटिया पहले आलोचना कर चुके हैं। इस प्रतियोगिता में भारत का सामना इंडोनेशिया, मलेशिया और सिंगापुर से होना था। भूटिया ने पश्चिम बंगाल सरकार से भी इस आयोजन पर संभावित खर्च को लेकर पुनर्विचार करने की अपील की। उनका सुझाव है कि यदि सरकार के पास 30 करोड़ रुपये जैसी राशि उपलब्ध है तो उसे खेल के स्थायी ढांचे और खिलाड़ियों के विकास पर खर्च किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस रकम से अगले कुछ वर्षों में फुटसल और सेवन-ए-साइड फुटबॉल के करीब 100 मैदान विकसित किए जा सकते हैं।

एड़ी-चोटी का जोर लगाने वालों के बीच शिवराज यादव ने मारी बाजी, मुख्यमंत्री के भरोसे ने बदला पूरा समीकरण

ग्वालियर ग्रामीण युवा मोर्चा में शिवराज यादव की ताजपोशी, विरोध की राजनीति पर नेतृत्व का फैसला भारी

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। ग्वालियर ग्रामीण भाजपा युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष पद पर शिवराज यादव की नियुक्ति को केवल संगठनात्मक जिम्मेदारी भर मानना राजनीतिक रूप से इस घटनाक्रम को छोटा करके देखने जैसा होगा। इस नियुक्ति ने ग्वालियर ग्रामीण भाजपा के भीतर चल रही खींचतान, प्रभाव की राजनीति और संगठन में किसकी पकड़ कितनी मजबूत है इन तमाम सवालों को एक साथ सामने ला दिया है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जिस नाम को रोकने के लिए भीतरखाने तमाम प्रयासों की चर्चा रही, आखिरकार वही नाम संगठन की पहली पंक्ति में पहुंच गया।

शिवराज यादव टॉप वन पर, बाकी दावेदार पीछे छूटे

शिवराज यादव की नियुक्ति का सबसे बड़ा राजनीतिक संदेश यही है कि युवा नेतृत्व के चयन में अंततः उस चेहरे पर भरोसा जताया गया, जिसे संगठन के भीतर आगे बढ़ने की क्षमता वाला माना गया। विरोध, आपत्तियों और अलग-अलग नामों को आगे बढ़ाने की कोशिशों के बावजूद यदि शिवराज यादव जिम्मेदारी हासिल करने में सफल रहे हैं, तो इसे उनकी व्यक्तिगत राजनीतिक पकड़ और नेतृत्व के विश्वास दोनों के संकेत के तौर पर देखा जा सकता है। यहां से शिवराज यादव की भूमिका सिर्फ एक पदाधिकारी की नहीं रह जाती। अब उनके सामने ग्रामीण क्षेत्र में युवा संगठन को सक्रिय करने, बूथ स्तर तक पहुंच बनाने और भाजपा के युवा नेटवर्क को मजबूत करने की बड़ी जिम्मेदारी है।

भारत सिंह कुशवाह और प्रेम सिंह राजपूत की कवायद भी नहीं बदल सकी तस्वीर

यदि राजनीतिक चर्चाओं को आधार माना जाए तो मनोज गुर्जर के पक्ष में सांसद भारत सिंह कुशवाह और ग्वालियर ग्रामीण भाजपा अध्यक्ष प्रेम सिंह राजपूत की सक्रियता महत्वपूर्ण मानी जा रही थी। दोनों का संगठन में अपना प्रभाव है और ग्रामीण भाजपा की राजनीति में इनके राजनीतिक समीकरणों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। लेकिन इस बार गणित कुछ और निकला। समर्थन, पैरवी और राजनीतिक समीकरण अपनी जगह रहे और अंतिम निर्णय शिवराज यादव के पक्ष में गया। यही कारण है कि इस नियुक्ति को ग्रामीण भाजपा की अंदरूनी राजनीति में एक महत्वपूर्ण संकेत के तौर पर देखा जा रहा है।

मनोज गुर्जर का नाम भी चर्चा में, लेकिन अंतिम बाजी शिवराज के हाथ

इस पूरे घटनाक्रम में मनोज गुर्जर का नाम भी प्रमुखता से चर्चा में रहा। राजनीतिक हलकों में यह चर्चा रही कि मनोज गुर्जर को अध्यक्ष बनाने के लिए ग्वालियर ग्रामीण भाजपा जिलाध्यक्ष प्रेम सिंह राजपूत और सांसद भारत सिंह कुशवाह की ओर से प्रयास किए गए थे। यह भी चर्चा रही कि मनोज गुर्जर के नाम को एपेक्स बैंक अध्यक्ष का समर्थन प्राप्त था। लेकिन राजनीति में अंतिम क्षण तक चलने वाली कवायद का परिणाम हमेशा पहले से तय नहीं होता। यही इस नियुक्ति में दिखाई दिया। तमाम समीकरणों और नामों के बीच आखिरकार शिवराज यादव का नाम आगे निकल गया।

मुख्यमंत्री का नाम क्यों बना इस पूरी कहानी का सबसे बड़ा राजनीतिक बिंदु?

राजनीतिक चर्चाओं में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के हस्तक्षेप की बात कही जा रही है। यदि यह बात सही है, तो नियुक्ति का महत्व और बढ़ जाता है। इसका अर्थ यह निकाला जाएगा कि स्थानीय स्तर पर चल रही खींचतान से ऊपर उठकर नेतृत्व ने अपने स्तर पर अंतिम निर्णय लिया और शिवराज यादव को जिम्मेदारी देने का रास्ता साफ किया। हालांकि, मुख्यमंत्री के सीधे हस्तक्षेप की स्वतंत्र सार्वजनिक पुष्टि उपलब्ध नहीं है, इसलिए इसे अभी राजनीतिक चर्चा के रूप में ही देखा जाना चाहिए। लेकिन इतना स्पष्ट है कि नियुक्ति के बाद शिवराज यादव का राजनीतिक कद निश्चित रूप से बढ़ा है।

विरोधियों की पूरी कवायद के बाद भी नहीं रुक सका शिवराज का रास्ता

शिवराज यादव की नियुक्ति की सबसे बड़ी राजनीतिक कहानी यही है कि अगर विरोध की चर्चाओं को सही माना जाए, तो उन्हें रोकने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाया गया, लेकिन अंतिम परिणाम ने विरोध करने वालों की रणनीति पर ही सवाल खड़े कर दिए। राजनीति में किसी व्यक्ति को रोकने की कोशिश और उसके बावजूद उसका आगे निकल जाना अपने आप में एक संदेश होता है। शिवराज यादव के मामले में भी यही संदेश निकलता दिखाई दे रहा है–संगठन के शीर्ष स्तर पर जिस नाम पर भरोसा किया गया, उसे स्थानीय स्तर के समीकरण रोक नहीं सके।

एक नियुक्ति ने कई संदेश दिए: शिवराज यादव की ताजपोशी ने एक साथ कई राजनीतिक संदेश दिए हैं। पहला–युवा नेतृत्व को आगे बढ़ाने की कोशिश जारी है। दूसरा–स्थानीय राजनीतिक विरोध हमेशा अंतिम निर्णय तय नहीं करता। तीसरा–शीर्ष नेतृत्व के भरोसे को संगठनात्मक फैसलों में महत्व मिल सकता है। और चौथा–ग्वालियर ग्रामीण भाजपा में आने वाले समय में युवा चेहरों की भूमिका और महत्वपूर्ण हो सकती है।

विरोध की राजनीति बनाम नेतृत्व का विश्वास–किसकी चली?

ग्वालियर ग्रामीण भाजपा की राजनीति को समझने वाले जानते हैं कि यहां संगठनात्मक पद केवल संगठनात्मक पद नहीं होते। इनके साथ भविष्य की राजनीतिक संभावनाएं भी जुड़ी होती हैं। ऐसे में युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष पद पर शिवराज यादव की नियुक्ति को भविष्य के संगठनात्मक समीकरणों के संदर्भ में भी देखा जाएगा। एक तरफ अलग-अलग नामों के पक्ष में समर्थन जुटाने की कोशिशें थीं, दूसरी तरफ शिवराज यादव का नाम था। अंतिम परिणाम ने फिलहाल यह बता दिया कि जिस नाम पर शीर्ष नेतृत्व ने भरोसा किया, वही नाम संगठन की कुर्सी तक पहुंचा।

शिवराज यादव के लिए अब असली परीक्षा शुरू: हालांकि नियुक्ति के बाद जश्न मनाना आसान है, लेकिन असली राजनीति अब शुरू होगी। शिवराज यादव को यह साबित करना होगा कि वह केवल राजनीतिक समीकरणों से पद पाने वाले नेता नहीं, बल्कि जमीन पर संगठन खड़ा करने वाले युवा नेता हैं। ग्रामीण ग्वालियर में युवाओं को जोड़ना, बूथ स्तर पर संगठन को सक्रिय करना, मंडल और शक्ति केंद्रों के बीच बेहतर समन्वय बनाना तथा पार्टी के कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से जमीन पर उतारना उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती होगी।

शिवराज यादव की जीत सिर्फ एक पद की जीत नहीं

ग्वालियर ग्रामीण युवा मोर्चा की कमान शिवराज यादव को मिलना फिलहाल उनके पक्ष में गया सबसे बड़ा संगठनात्मक फैसला है। जिन राजनीतिक समीकरणों में उनका रास्ता कठिन बताया जा रहा था, उन्हीं समीकरणों को पार करते हुए उनका नाम अंतिम सूची तक पहुंचा। मनोज गुर्जर के पक्ष में बताए जा रहे समर्थन और अलग-अलग स्तरों पर हुई कवायद अपनी जगह रही, लेकिन अंतिम तस्वीर शिवराज यादव के पक्ष में बनी। इसलिए इस पूरे घटनाक्रम का सबसे बड़ा राजनीतिक संदेश यही है– ग्वालियर ग्रामीण भाजपा में फिलहाल शिवराज यादव का नाम टॉप वन पर है। विरोध के बावजूद रास्ता नहीं रुका, बल्कि जिम्मेदारी मिलने के साथ उनका राजनीतिक कद और बढ़ गया। अब नजर इस बात पर रहेगी कि शिवराज यादव इस भरोसे को संगठन की ताकत में कितनी तेजी से बदलते हैं।

अवैध रेत कारोबार पर कलेक्टर रुचिका चौहान का सख्त रुख

संयुक्त टीम की छापामार कार्रवाई में 40 ट्रॉली रेत नष्ट, अवैध फड़ों के रास्ते भी किए बंद

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। ग्वालियर जिले में खनिज संपदा के अवैध उत्खनन, परिवहन और भंडारण पर जिला प्रशासन ने शिकंजा कस दिया है। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देश पर राजस्व, खनिज और पुलिस विभाग की संयुक्त टीम ने ग्राम चैत क्षेत्र में छापामार कार्रवाई करते हुए अवैध रूप से संचालित तीन रेत फड़ों पर बड़ी कार्रवाई की। टीम ने इन फड़ों पर जमा करीब 40 ट्रॉली रेत को मशीनों की मदद से नष्ट कराया, जिससे अवैध कारोबारियों को बड़ा झटका लगा है।

कार्रवाई के दौरान संयुक्त टीम ने पाया कि पक्के कंक्रीट और सीमेंट से तैयार किए गए स्थानों पर रेत का अवैध भंडारण किया जा रहा था। प्रशासन ने मौके पर ही कार्रवाई करते हुए अवैध रूप से जमा रेत को नष्ट कराया। साथ ही इन फड़ों तक पहुंचने वाले रास्तों को भी खोदकर अवरुद्ध कर दिया गया, ताकि दोबारा वहां अवैध गतिविधियां शुरू न हो सकें।

जिला प्रशासन की इस कार्रवाई को अवैध रेत कारोबार के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान की प्रभावी कड़ी माना जा रहा है। प्रशासन का स्पष्ट संदेश है कि प्राकृतिक संसाधनों के अवैध दोहन और शासन को राजस्व की क्षति पहुंचाने वाली गतिविधियों को किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

शनिवार को हुई कार्रवाई में नायब तहसीलदार श्री अशोक सिंह तोमर, खनिज विभाग के श्री रमाकांत तिवारी सहित राजस्व, खनिज और पुलिस विभाग के अन्य अधिकारी शामिल रहे। अवैध रेत गतिविधियों में संलिप्त लोगों के खिलाफ खनिज अधिनियम के प्रावधानों के तहत आगे की कार्रवाई की जा रही है। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने जिले के सभी एसडीएम, राजस्व अधिकारियों और खनिज विभाग की टीम को अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भंडारण के मामलों में लगातार निगरानी रखते हुए छापामार कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। प्रशासन की सक्रियता से साफ है कि जिले में अवैध खनन के नेटवर्क पर कार्रवाई का अभियान केवल औपचारिकता तक सीमित नहीं है, बल्कि मौके पर पहुंचकर अवैध गतिविधियों को खत्म करने पर जोर दिया जा रहा है। जिला प्रशासन ने भी स्पष्ट किया है कि खनिज पदार्थों की अवैध गतिविधियों के खिलाफ यह अभियान लगातार जारी रहेगा और नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध नियमानुसार कठोर कार्रवाई की जाएगी।

धर्मवीर सिंह यादव को मिला राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पदक, यह सम्मान बताता है कि कानून के लिए जिया गया हर दिन आखिरकार राष्ट्र भी पहचानता है

राष्ट्रपति पदक तक का सफर: जब वर्दी केवल जिम्मेदारी नहीं, न्याय की सबसे मजबूत पहचान बन जाती है

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पदक कोई सामान्य पुरस्कार नहीं है। यह उन पुलिस अधिकारियों को प्रदान किया जाता है जिन्होंने लंबे समय तक उत्कृष्ट, निष्कलंक, अनुशासित और विशिष्ट सेवा देकर पुलिस व्यवस्था को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया हो। यह सम्मान केवल एक सफल ऑपरेशन या एक बड़ी गिरफ्तारी के लिए नहीं दिया जाता, बल्कि वर्षों की ईमानदार सेवा, नेतृत्व क्षमता, उत्कृष्ट रिकॉर्ड, अनुकरणीय आचरण और कानून के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के आधार पर प्रदान किया जाता है। ऐसे सम्मान के लिए राज्य सरकार की अनुशंसा, सेवा अभिलेखों की समीक्षा और निर्धारित प्रक्रिया के बाद भारत सरकार तथा अंततः राष्ट्रपति की स्वीकृति होती है।

ऐसे प्रतिष्ठित सम्मान से ग्वालियर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह यादव का सम्मानित होना केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह ग्वालियर पुलिस

की कार्यशैली, अनुशासन और कानून के प्रति प्रतिबद्धता की राष्ट्रीय स्तर पर हुई सराहना भी है। अपराध की दुनिया केवल फिल्मों में दिखाई देने वाली कहानी नहीं होती। एक हत्या के पीछे कई कोण हो सकते हैं, एक लूट के पीछे संगठित गिरोह हो सकता है, साइबर अपराध में अपराधी हजारों किलोमीटर दूर बैठा हो सकता है और मादक पदार्थों की तस्करी के तार कई राज्यों तक जुड़े हो सकते हैं। कई बार घटनास्थल पर मौजूद सबसे छोटा सुराग ही पूरे अपराध का सच सामने लाता है। पुलिस को वैज्ञानिक साक्ष्य, तकनीकी विश्लेषण, गवाहों के बयान, डिजिटल डेटा, फॉरेंसिक रिपोर्ट, कानूनी प्रक्रियाओं और मानवीय संवेदनाओं–इन सभी को साथ लेकर निष्पक्ष जांच करनी पड़ती है। यही कारण है कि एक मजबूत विवेचना केवल अपराधी को पकड़ने का माध्यम नहीं होती, बल्कि अदालत में न्याय सुनिश्चित करने की सबसे मजबूत नींव भी बनती है।

एक सक्षम पुलिस नेतृत्व का वास्तविक मूल्य संकट की घड़ी में दिखाई देता है। जब अपराधी कानून को चुनौती देता है, तब पुलिस केवल हथियारों से नहीं, बल्कि कानून, विवेक, रणनीति और धैर्य के साथ उसका सामना करती है। किसी भी जिले में कानून-व्यवस्था बनाए रखना, अपराध पर नियंत्रण रखना, पुलिस बल का मनोबल ऊँचा रखना, जनता का विश्वास जीतना और हर कार्रवाई को कानूनी कसौटी पर खरा उतारना–ये सभी जिम्मेदारियाँ पुलिस नेतृत्व की क्षमता को परिभाषित करती हैं। ग्वालियर पुलिस ने समय-समय पर विभिन्न अभियानों के माध्यम से अपराधियों के विरुद्ध कार्रवाई, वांछित आरोपियों की गिरफ्तारी, मादक पदार्थों के खिलाफ अभियान, संगठित अपराध पर निगरानी और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के प्रयास किए हैं। ऐसे कार्यों के पीछे केवल मैदान में दिखाई देने वाली कार्रवाई नहीं होती, बल्कि घंटों की योजना, सूचना संग्रह, तकनीकी विश्लेषण, समन्वय और कानूनी प्रक्रिया का गंभीर परिश्रम भी शामिल होता है।

राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पदक यह संदेश देता है कि राष्ट्र केवल परिणाम नहीं देखता, बल्कि उस परिणाम तक पहुँचने वाली वर्षों की ईमानदार, निष्पक्ष और अनुशासित सेवा को भी सम्मान देता है। ऐसे सम्मान पुलिस बल के प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी के मनोबल को बढ़ाते हैं और यह विश्वास मजबूत करते हैं कि कर्तव्य के प्रति निष्ठा कभी व्यर्थ नहीं जाती।

यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में पुलिस की सबसे बड़ी शक्ति उसकी निष्पक्षता होती है। अपराधी की पहचान, प्रभाव या पद नहीं, बल्कि कानून सर्वोच्च होना चाहिए। जब पुलिस निष्पक्ष होकर कार्य करती है तो आम नागरिक का विश्वास मजबूत होता है और अपराधी के मन में कानून का भय पैदा होता है। यही किसी भी सभ्य समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

धर्मवीर सिंह यादव को मिला राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पदक केवल एक अधिकारी के कंधे पर सजा अलंकरण नहीं, बल्कि यह संदेश है कि ईमानदारी, अनुशासन, निष्पक्षता और जनसेवा का मार्ग कठिन अवश्य है, परंतु अंततः वही राष्ट्र के सर्वोच्च सम्मान तक पहुँचाता है। ग्वालियर पुलिस के लिए यह गर्व का क्षण है और समाज के लिए यह विश्वास का संदेश कि जब वर्दी कर्तव्य को सर्वोपरि रखती है, तब कानून का राज और नागरिकों की सुरक्षा दोनों मजबूत होते हैं।

धर्मवीर सिंह यादव की सख्ती का असर

रातभर चला कॉम्बिंग ऑपरेशन, 197 वारंटी दबोचे, 282 गुंडे-हिस्ट्रीशीटर चेक

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। ग्वालियर में अपराधियों पर शिकंजा कसने के लिए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह यादव के निर्देश पर पुलिस ने 21 और 22 अगस्त की दरमियानी रात शहर से लेकर देहात तक बड़े पैमाने पर कॉम्बिंग गश्त की। देर रात अचानक पुलिस की टीमों ने संवेदनशील इलाकों में दस्तक दी और फरार वारंटियों, गुंडों, हिस्ट्रीशीटरों तथा संदिग्ध गतिविधियों में शामिल लोगों की धरपकड़ और चेकिंग शुरू की। कार्रवाई का असर ऐसा रहा कि कई इलाकों में अपराधियों के बीच पुलिस की अचानक सक्रियता चर्चा का विषय बन गई।

कॉम्बिंग गश्त के दौरान ग्वालियर पुलिस ने 93 स्थाई वारंट और 104 गिरफ्तारी वारंट सहित कुल 197 वारंटियों को गिरफ्तार किया। इसके साथ ही पुलिस ने 140 गुंडों और 142 हिस्ट्रीशीटरों सहित कुल 282 अपराधियों की चेकिंग की। पुलिस

टीमों ने अपराधियों के घरों तक पहुंचकर उनकी मौजूदगी और गतिविधियों की जानकारी जुटाई तथा पुराने रिकॉर्ड को भी अपडेट किया।

एसएसपी धर्मवीर सिंह यादव ने स्वयं शहर में कॉम्बिंग गश्त का जायजा लिया और अधिकारियों को प्रभावी कार्रवाई के निर्देश दिए। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षकों और राजपत्रित अधिकारियों के नेतृत्व में थाना प्रभारियों ने पुलिस बल के साथ शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में पैदल गश्त की। संवेदनशील इलाकों के अलावा होटल, लॉज, धर्मशाला, ढाबे और बैंक-एटीएम की भी जांच की गई। संदिग्ध वाहनों तथा चेहरे पर कपड़ा बांधकर दोपहिया वाहन चलाने वालों को भी पुलिस ने चेक किया।

कॉम्बिंग अभियान के दौरान थाना हजीरा और थाना महाराजपुरा में अवैध शराब के एक-एक प्रकरण दर्ज किए गए। वहीं धारा 107/116 जाफौ के तहत दो प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की गई। जेल से रिहा होकर आए आरोपियों तथा जिला बदर व्यक्तियों की गतिविधियों की भी जांच की गई।

पुलिस ने कई सक्रिय बदमाशों के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कार्रवाई करते हुए उन्हें स्पष्ट चेतावनी दी कि अपराध में दोबारा संलिप्तता पाए जाने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। एसएसपी धर्मवीर सिंह यादव के निर्देश पर हुई इस कार्रवाई ने यह संदेश दिया है कि ग्वालियर पुलिस अब अपराधियों की निगरानी और धरपकड़ को लेकर रात-दिन लगातार सक्रिय है।

पुस्तकों से अच्छा कोई मित्र नहीं: कलेक्टर रुचिका चौहान

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तक प्रदर्शनी का शुभारंभ

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। महाराज बाड़ा स्थित सेंट्रल लाइब्रेरी में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का शनिवार को कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने शुभारंभ किया। प्रदर्शनी 22 से 30 अगस्त तक आमजन के लिए खुली रहेगी। यहां विभिन्न विषयों और आयु वर्गों से संबंधित पुस्तकों का संग्रह किफायती दरों पर उपलब्ध कराया गया है।

कलेक्टर श्रीमती चौहान ने कहा कि 'पुस्तकों से अच्छा कोई मित्र नहीं होता।' उन्होंने विद्यार्थियों से नियमित रूप से अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने का आह्वान करते हुए कहा कि पुस्तक अध्ययन से व्यक्ति के ज्ञान और व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। उन्होंने रीडिंग क्लब की अवधारणा को बढ़ावा देने की आवश्यकता भी बताई। कलेक्टर ने कहा कि सेंट्रल लाइब्रेरी में विद्यार्थी अध्ययन के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी करते हैं। उन्होंने विद्यालयों के विद्यार्थियों को पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन कराने की व्यवस्था करने के निर्देश दिए, ताकि अधिक से अधिक छात्र इसका लाभ उठा सकें। प्रदर्शनी में बच्चों, विद्यार्थियों और सभी आयु वर्ग के पाठकों के लिए साहित्य, ज्ञान-विज्ञान एवं विभिन्न विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। इस अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अधिकारी, ग्रंथपाल राकेश शर्मा, कार्यक्रम अधिकारी आर.के. त्रिवेदी सहित अधिकारी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

जहां बड़े-बड़े क्राइम मास्टरमाइंड हार मान जाएं, वहां से शुरू होती है टीआई डॉ. संतोष यादव की पड़ताल

घटनास्थल की बारीकी, साक्ष्यों की गहरी समझ, वैज्ञानिक जांच और अपराधियों की मनोवृत्ति को पढ़ने की क्षमता ने टीआई डॉ. यादव को ग्वालियर पुलिस के सबसे प्रभावशाली क्राइम इन्वेस्टिगेटर्स में शामिल किया

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। अपराध की दुनिया में कई ऐसे मामले सामने आते हैं, जहां पहली नजर में हर सुराग धुंधला दिखाई देता है। घटनास्थल पर मौजूद सबूत बिखरे होते हैं, गवाह भ्रमित होते हैं और अपराधी अपनी पहचान छिपाने के लिए हर संभव चाल चल चुका होता है। ऐसे जटिल मामलों में अक्सर अनुभवी जांचकर्ता भी लंबा समय लेते हैं, लेकिन टीआई डॉ. संतोष यादव की कार्यशैली उन्हें अलग पहचान दिलाती है। उनकी सबसे बड़ी विशेषता केवल अपराधी को पकड़ना नहीं, बल्कि अपराध की पूरी कहानी को घटनास्थल से जोड़कर समझना है। वे किसी भी

मामले में केवल कागजी जांच पर भरोसा नहीं करते, बल्कि स्वयं घटनास्थल पर पहुंचकर हर छोटे-बड़े पहलू का बारीकी से निरीक्षण करते हैं। घटनास्थल का वातावरण, साक्ष्यों की स्थिति, गवाहों के बयान, तकनीकी प्रमाण और अपराधी की मनोवैज्ञानिक सोच–इन सभी को जोड़कर वे ऐसी जांच की दिशा तय करते हैं, जो अक्सर अपराधी तक पहुंचने का सबसे मजबूत रास्ता बनती है।

क्राइम इन्वेस्टिगेशन में उनकी पहचान एक ऐसे अधिकारी की है, जो अनुमान नहीं बल्कि तथ्यों और वैज्ञानिक साक्ष्यों के आधार पर आगे बढ़ते हैं। यही वजह है कि कई जटिल और चुनौतीपूर्ण मामलों में उनकी जांच निर्णायक साबित हुई। उनकी कार्यशैली यह सिद्ध करती है कि सफल पुलिसिंग केवल वर्दी की ताकत से नहीं, बल्कि तेज दिमाग, धैर्य, अनुभव और सूक्ष्म विश्लेषण से होती है।

टीआई डॉ. संतोष यादव का मानना है कि हर अपराध अपने पीछे कोई न कोई सच अवश्य छोड़ता है, आवश्यकता केवल उसे पहचानने और सही दिशा में जोड़ने की होती है। यही सोच उन्हें एक कुशल अन्वेषक, प्रभावी क्राइम कंट्रोलर और उत्कृष्ट पुलिस अधिकारी बनाती है।

राष्ट्रपति सराहनीय सेवा पदक (PMS) से सम्मानित होना उनके वर्षों के समर्पण, निष्पक्षता, ईमानदारी और उत्कृष्ट पुलिस सेवा का प्रमाण है। यह सम्मान न केवल टीआई डॉ. संतोष यादव की उपलब्धि है, बल्कि ग्वालियर पुलिस के लिए भी गर्व का विषय है।

स्वामित्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक पूनम विश्वकर्मा एवं संपादक आकाश कुशवाह के लिए विश्वकर्मा प्रिंटिंग प्रेस, ग्राम पादरी, तहसील वैढ़न, जिला सिंगरौली, मध्यप्रदेश से मुद्रित व कुशवाह मोहल्ला, ग्राम पंचायत सोजना, पोस्ट-तिघरा, ग्वालियर, मध्यप्रदेश - 474001 से प्रकाशित मोबाइल नं. 84355 00216 संपादक- आकाश कुशवाह (सभी प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र ग्वालियर रहेगा।)